بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक 10-11

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

05-12 रमज़ान 1447 हिज्री कमरी, 05-12 अमान 1405 हिज्री शम्सी, 05-12 फ़रवरी 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَیُزَکِّیۡہِمۡ وَیُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَۃَ ٭ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ﴿۳﴾

अनुवाद: वही है जिसने अनपढ़ लोगों के बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें अपनी आयतें पढ़कर सुनाता था, उन्हें पवित्र करता था और उन्हें किताब और ज्ञान सिखाता था, जबकि उससे पहले वे साफ़ गुमराही में थे। (सूरह जुमाअ: 3)

ईसा अलैहिस्सलाम के अवतरण, इमाम महदी के आगमन और इस्लाम के पुनरुत्थान की खुशखबरी

قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ وَالَّذِیۡ نَفۡسِیۡ بِیَدِہٖ لَیُوۡشِکَنَّ اَنۡ یَّنۡزِلَ فِیۡکُمُ ابۡنُ مَرۡیَمَ حَکَمًا عَدۡلًا فَیَکۡسِرَ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلَ الۡخِنۡزِیۡرَ وَیَضَعَ الۡجِزۡیَۃَ وَیَفِیۡضَ الۡمَالُ حَتّٰی لَا یَقۡبَلَہٗ اَحَدٌ حَتّٰی تَکُوۡنَ السَّجۡدَۃُ الۡوَاحِدَۃُ خَیۡرًا مِّنَ الدُّنۡیَا وَمَا فِیۡہَا۔

(सहीह बुख़ारी पारा 13, किताबुल अंबिया, बाब नुज़ूल ईसा इब्न मरियम)

अनुवाद:- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि 0व सल्लम ने फ़रमाया, उस हस्ती की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, क़रीब है कि ईसा बिन मरियम तुममें उतरेंगे, एक न्याय करने वाले शासक बनकर। वे सलीब को तोड़ देंगे, और ख़िन्ज़ीर अर्थात सूअर को मार डालेंगे, और जज़िया को रोक देंगे। माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसे लेना भी पसंद नहीं करेगा। उनके समय में एक सज्दा दुनिया और जो कुछ उसमें है, सब से बेहतर होगा।

عَنۡ اَبِیۡ ہُرَیۡرَۃَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَالَ یُوۡشِکُ مَنۡ عَاشَ مِنۡکُمۡ اَنۡ یَّلۡقٰی عِیۡسَی ابۡنَ مَرۡیَمَ اِمَامًا مَّہۡدِیًّا وَّحَکَمًا عَدۡلًا فَیَکۡسِرَ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلَ الۡخِنۡزِیۡرَ وَیَضَعَ الۡجِزۡیَۃَ وَتَضَعَ الۡحَرۡبُ اَوۡزَارَہَا۔

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 2, पृष्ठ 411)

अनुवाद:- अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुममें से जो उस समय ज़िंदा होगा, वह ईसा बिन मरियम को पाएगा, जो इमाम महदी होंगे और न्याय का फ़ैसला करने वाले होंगे (यानी उम्मत के विभिन्न समूहों के बीच न्याय और इंसाफ़ से फ़ैसला करेंगे)। वे सलीब को तोड़ेंगे, और ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, और जज़िया को बंद कर देंगे। और उनके समय में लड़ाई अपने हथियार रख देगी, अर्थात धार्मिक युद्धों का अंत हो जाएगा।

عَنۡ اَبِیۡ ہُرَیۡرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ قَالَ کُنَّا جُلُوۡسًا عِنۡدَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ فَاُنۡزِلَتۡ عَلَیۡہِ سُوۡرَۃُ الۡجُمُعَۃِ وَاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ قَالَ قُلۡتُ مَنۡ ہُمۡ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ فَلَمۡ یُرَاجِعۡہُ حَتّٰی سَاَلَ ثَلٰثًا وَفِیۡنَا سَلۡمَانُ الۡفَارِسِیُّ وَضَعَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ یَدَہٗ عَلٰی سَلۡمَانَ ثُمَّ قَالَ لَوۡ کَانَ الۡاِیۡمَانُ عِنۡدَ الثُّرَیَّا لَنَالَہٗ رِجَالٌ اَوۡ رَجُلٌ مِّنۡ ہٰؤُلَآءِ

(बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, बाब अल-जुमुआ)

अनुवाद:- अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है, वे कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि आप पर सूरह अल-जुमुआ की आयत "व आख़रीना मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" नाज़िल हुई। मैंने अर्ज़ किया, हे अल्लाह के रसूल! वे लोग कौन हैं? जब आपने जवाब न दिया तो मैंने तीन बार पूछा। और सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो भी हमारे बीच बैठे हुए थे। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ सलमान पर रखकर फ़रमाया, अगर ईमान सुरैया (सितारे) के पास भी चला जाए, तो इन लोगों में से कुछ लोग या एक आदमी उसे वहाँ से भी ले आएगा।

★ ★ ★

अक़ीदा-ए-ख़त्म-ए-नुबुव्वत, तकमील-ए-शरीअत-ए-इस्लामिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एलान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हमारे मज़हब का सार और असली निचोड़ यह है कि **ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह**। हमारा वह विश्वास, जिसे हम इस दुनियावी जीवन में रखते हैं और जिसके साथ हम खुदा तआला की कृपा और सहायता से इस नश्वर संसार से विदा होंगे, यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमन-नबिय्यीन और सबसे श्रेष्ठ रसूल हैं, जिनके हाथ से धर्म की पूर्णता हो चुकी है और वह नेमत अपने पूर्ण दर्जे तक पहुँच चुकी है, जिसके द्वारा मनुष्य सीधी राह अपनाकर खुदा तआला तक पहुँच सकता है।

और हम पूरे पक्के यक़ीन के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ आसमानी किताबों का अंतिम ग्रंथ है। उसकी शरीअत, उसकी सीमाओं, उसके आदेशों और हुक्मों से न एक कण अधिक हो सकता है और न कम हो सकता है। और अब खुदा की ओर से ऐसी कोई वह्य या इल्हाम नहीं हो सकता जो क़ुरआन के हुक्मों में संशोधन, रद्द या किसी एक हुक्म को बदल सके। अगर कोई ऐसा विचार करे तो वह हमारे नज़दीक मोमिनों की जमाअत से बाहर, नास्तिक और काफ़िर है।"

(इज़ाला ओहाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 3, पृष्ठ 169 से 170)

मुझे उस खुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है, और जिस पर झूठा आरोप लगाना लानतियों का काम है, कि उसने मुझे मसीह मौऊद बनाकर भेजा है। और जैसे मैं क़ुरआन शरीफ़ की आयतों पर ईमान रखता हूँ, वैसे ही बिना ज़रा भी फ़र्क किए खुदा की उस खुली-खुली वह्य पर ईमान रखता हूँ जो मुझ पर हुई है, जिसकी सच्चाई उसके लगातार प्रकट होने वाले निशानों से मुझ पर स्पष्ट हो गई है। और मैं बैतुल्लाह में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पवित्र वह्य जो मुझ पर उतरती है, उसी खुदा की कसम है जिसने हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अपना कलाम उतारा था। (एक ग़लती का इज़ाला, पृष्ठ 9 ,8, मुद्रित 1901)

बरेली के एक व्यक्ति ने बानी जमाअत अहमदिया मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखा कि क्या आप वही मसीह मौऊद हैं, जिनके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हदीसों में खबर दी है, और खुदा तआला की क़सम खाकर इसका उत्तर लिखें। इस पर हुज़ूर ने उसे शपथ लेकर लिखित उत्तर दिया कि:

मैं पहले भी इस विस्तृत स्वीकार को अपनी पुस्तकों में क़सम के साथ लोगों के सामने प्रकट कर चुका हूँ, और अब भी इस पत्र में खुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूँ, जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, कि मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिसकी खबर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन सहीह हदीसों में दी है जो सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम और दूसरी सहीह किताबों में दर्ज हैं। **व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा।** (रूहानी ख़ज़ायन मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 327 ,326)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

खुदा तआलीय प्रकाशना (इलाही मार्गदर्शन) की रोशनी में न्यायपूर्ण निर्णय

सैय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इमाम महदी और मसीह मौऊद के आने की शुभ सूचना देते हुए फ़रमाया था कि वे उम्मत में न्याय करने वाले और सही निर्णय देने वाले के रूप में आएँगे। हदीस मुबारक के शब्द इस प्रकार हैं:

"तुममें से जो जीवित रहेगा वह ईसा इब्न मरियम से मिलेगा वे इमाम महदी होंगे और न्याय करने वाले होंगे। वे सलीब को तोड़ देंगे और सूअर को मार देंगे।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 2, पृष्ठ 411, मिस्र से प्रकाशित, रिवायत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो)

अर्थात जो लोग उस समय तक जीवित रहेंगे, वे हज़रत ईसा इब्न मरियम से मिलेंगे। वे इमाम महदी होंगे, न्याय करने वाले होंगे, और उम्मत के मतभेदों का निर्णय करेंगे। वे सलीब को तोड़ेंगे और सूअर को मार देंगे।

इस हदीस में जब यह फ़रमाया गया कि मसीह मौऊद न्याय करने वाले होंगे, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि उनके समय में मुसलमानों के अनेक समूह बन जाएँगे और उनके बीच बहुत मतभेद पैदा हो जाएँगे। वे इस्लामी शिक्षाओं और आदेशों को समझने में इतनी गलतफहमियों में पड़ जाएँगे कि बड़े-बड़े विद्वान भी इन मतभेदों को समाप्त नहीं कर पाएँगे। तब इमाम महदी, जो खुदा तआला का प्रतिनिधि होगा, खुदा तआलीय मार्गदर्शन के अनुसार इन मतभेदों को समाप्त कर देगा।

जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को खुदा तआला ने इमाम महदी और मसीह मौऊद बनाकर न्याय करने के पद पर स्थापित किया, उस समय मुसलमानों के समूहों में आपसी मतभेद बहुत बढ़ चुके थे। केवल आम लोग ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े विद्वान भी आपसी झगड़ों में लगे हुए थे। अपने बनाए हुए विश्वास छोड़ने को तैयार नहीं थे। समझाने के बजाय मुसलमान कहलाने वाले लोग एक-दूसरे से तलवार के सहारे धार्मिक युद्ध कर रहे थे और आज भी कर रहे हैं। छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को धर्म से बाहर कहकर हत्या तक कर रहे थे।

अब उन सुधारों का उल्लेख करने से पहले, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुदा तआला के आदेश और खुदा तआलीय मार्गदर्शन के अनुसार किए, उन कुछ गलत विश्वासों का उल्लेख किया जाता है जो मुसलमानों में फैल चुके थे और जिनकी आपने सुधार की।

मुसलमानों में ईसाइयों के प्रभाव से, क़ुरआन और हदीस के विरुद्ध यह विश्वास फैल गया था कि ईसा अलैहिस्सलाम अपने भौतिक शरीर सहित जीवित आकाश में हैं और वही मुसलमानों की सुधार के लिए उसी शरीर के साथ आकाश से उतरेंगे। खुदा तआला ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ुरआन मजीद से ऐसे तीस प्रमाण सिखाए जिनसे बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि ईसा अलैहिस्सलाम को सूली की मृत्यु से बचा लिया गया था। फिर वे स्थान परिवर्तन करके बनी इस्राईल की खोई हुई जातियों की खोज में निकले और 120 वर्ष की आयु में कश्मीर में उनका देहांत हुआ। श्रीनगर के मोहल्ला खनयार में उनकी क़ब्र आज भी मौजूद है। आपने तीस क़ुरआनी आयतों से ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सिद्ध की और खुदा तआलीय मार्गदर्शन की रोशनी में ऐतिहासिक प्रमाणों से यह भी बताया कि वे सूली से बचकर अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते कश्मीर पहुँचे और वहीं उनका देहांत हुआ। आज न केवल मुसलमान बल्कि अन्य विद्वान और शोधकर्ता भी ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु को सिद्ध कर रहे हैं और ऐसी शोध प्रकाशित कर चुके हैं जिनसे उनका कश्मीर की ओर जाना प्रमाणित होता है।

ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सिद्ध करके आपने ईसाइयों के उस गलत विश्वास को तोड़ दिया कि यीशु मसीह खुदा या खुदा का बेटा है, और मुसलमानों की इस गलत धारणा को भी समाप्त कर दिया कि वे शारीरिक रूप से आकाश पर गए और उसी शरीर के साथ वापस उतरेंगे। इस महान सत्य के प्रकट होने के बाद मुसलमान और ईसाई विद्वान अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम को स्वीकार कर रहे हैं। और जिन्हें यह सौभाग्य नहीं मिला, वे मसीह मौऊद के आने की शिक्षा को फ़रमायानी कह रहे हैं और न केवल क़ुरआन और हदीस बल्कि उन हजारों बुज़ुर्गों को भी झुठला रहे हैं जो इमाम महदी और मसीह मौऊद की प्रतीक्षा करते रहे और खुदा तआला के संदेशों के आधार पर उनके आने की सूचना देते रहे।

(2) मुसलमानों में यह गलतफहमी फैल गई थी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे अंतिम नबी हैं कि उनके बाद क़यामत तक कोई नबी नहीं आ सकता, चाहे वह उनका अनुयायी ही क्यों न हो। आपने क़ुरआन मजीद के प्रमाणों से स्पष्ट किया कि नबूवत एक पद है जिसे खुदा तआला ने अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायियों के लिए सुरक्षित रखा है। और आपने फ़रमाया कि मैं भी आँहज़रत का सेवक हूँ, इसलिए इसी सेवा की बरकत से खुदा तआला ने मुझे नबूवत और दिव्य संवाद का सम्मान दिया है।

आपने मुसलमानों को यह भी समझाया कि वे एक ओर यह मानते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अंतिम नबी हैं, पर दूसरी ओर बनी इस्राईल के नबी ईसा को आपकी उम्मत में नबी बनाकर लाते हैं। और आपकी उम्मत में आपके अनुयायी होकर नबी आने से इनकार करके वास्तव में आपकी महानता का अनादर करते हैं। आपने फ़रमाया:

"यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से न होता और उनकी पैरवी न करता, तो चाहे मेरे कर्म संसार के सभी पहाड़ों के बराबर होते, तब भी मुझे दिव्य संवाद का यह सम्मान कभी न मिलता। क्योंकि अब मुहम्मदी नबूवत के अतिरिक्त सभी नबूवतें बंद हैं। शरीअत लाने वाला नबी नहीं आ सकता, और बिना शरीअत का नबी वही हो सकता है जो पहले उम्मती हो।"

(तजलियात-ए-इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 411–412)

खुदा तआला का धन्यवाद है कि पिछले सवा सौ वर्षों में लाखों लोग अपनी गलती सुधारकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान ला चुके हैं। यहाँ तक कि बड़े-बड़े अरब विद्वान भी जब अपनी गलती समझे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके इस सच्चे सेवक पर दुरूद भेजने लगे।

(3) मुसलमानों में क़ुरआन और हदीस के विरुद्ध यह खतरनाक गलत विश्वास भी फैल गया था कि तलवार से धार्मिक युद्ध अभी भी जारी है और आने वाला इमाम महदी तलवार से इस्लाम फैलाएगा। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट बता दिया था कि उस समय तलवार से होने वाला धार्मिक युद्ध समाप्त हो जाएगा। जैसा कि सहीह बुख़ारी में लिखा है कि मसीह मौऊद आने पर युद्ध समाप्त कर देंगे। और दूसरी हदीस में है कि जज़िया समाप्त कर देंगे।

(सहीह मुस्लिम)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि खुदा तआला ने मुझे इस समय इमाम महदी और मसीह मौऊद बनाकर भेजा है और मेरे समय में तलवार से धार्मिक युद्ध समाप्त है। आपने फ़रमाया:

"ऐ इस्लाम के विद्वानो और मौलवियो! मेरी बात सुनो। मैं सच कहता हूँ कि अब युद्ध का समय नहीं है। खुदा तआला के पवित्र नबी की अवज्ञा मत करो। मसीह मौऊद आ चुका है और उसने आदेश दिया है कि धार्मिक युद्धों से, जो तलवार और रक्तपात से होते हैं, रुक जाओ। जो व्यक्ति मुझे स्वीकार करेगा वह ऐसे उपदेशों से दूर रहेगा और इस मार्ग को बुरा तथा खुदा तआला के क्रोध का कारण समझेगा।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद)

फिर आपने फ़रमाया:

अब जब मसीह मौऊद आ चुका है तो हर मुसलमान का कर्तव्य है कि वह युद्ध से रुक जाए। यदि मैं न आया होता तो कुछ हद तक इस गलतफहमी का बहाना हो सकता था, पर अब मैं आ चुका हूँ और वादा पूरा होते देख लिया गया है। इसलिए अब धार्मिक रूप से तलवार उठाने वालों के पास खुदा तआला के सामने कोई कारण नहीं। जो व्यक्ति क़ुरआन और हदीस को समझता है वह जान सकता है कि इस समय जो युद्ध किए जा रहे हैं वे इस्लामी युद्ध नहीं बल्कि मन की इच्छाओं या स्वर्ग पाने की लालसा से उत्पन्न गलत कार्य हैं।

फिर आपने फ़रमाया:

"मैं एक आदेश लेकर आया हूँ कि अब से तलवार के युद्ध का अंत है, पर अपने मन को शुद्ध करने का प्रयास बाकी है। यह मैंने अपनी ओर से नहीं फ़रमाया बल्कि खुदा तआला की यही इच्छा है।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद)

अपने काव्य में आपने फ़रमाया:

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तों ख्याल, दीं के लिए हराम है अब जंग और किताल
फ़रमा चुके हैं सैय्यद कौनेन मुस्तफ़ा, ईसा मसीह जंगों का कर देंगे इलतिवा
यह हुक्म सुनकर भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सखतः हज़ीमत उठाएगा (तोहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ 40)

अब निर्णय हम पाठकों पर छोड़ते हैं कि वे स्वयं विचार करें सन 1900 के बाद जब सच्चे इमाम महदी और मसीह मौऊद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने तलवार के धार्मिक युद्ध के अंत की घोषणा की, तब से क्या किसी युद्ध में मुसलमानों को विजय मिली? या युद्ध के नाम पर मुसलमानों ने मुसलमानों से ही लड़ाई की, एक-दूसरे का रक्त बहाया, इस्लाम को बदनाम किया और मुसलमानों को कमज़ोर किया?

काश मुसलमान खुदा तआला की ओर से भेजे गए इस सच्चे मसीह मौऊद की पीड़ा भरी पुकार सुन लेते, तो आज दुनिया में मुसलमान मुसलमान का रक्त न बहाता और उनकी शक्ति अच्छे कार्यों में लगती।

अतः आइए न्यायपूर्ण निर्णयों की ओर लौटें। न्याय से संबंधित कुछ और निर्णयों पर चर्चा अगली प्रकाशित कड़ी में की जाएगी। वबिल्लाहि तौफ़ीक़।

ख़ुत्बः जुमअः

"निजात दो बातों पर निर्भर है।
(1) पहली यह कि पूरे यकीन के साथ खुदा तआला के अस्तित्व और उसकी एकता पर ईमान लाया जाए।
(2) दूसरी यह कि हज़रत अहदियत जल्ला शानुहू की ऐसी पूर्ण मुहब्बत उसके दिल में बस जाए, जिसके प्रभाव और प्रभुत्व का परिणाम यह हो कि खुदा तआला की आज्ञा का पालन ही उसके लिए जीवन की सच्ची शांति बन जाए, जिसके बिना वह जी ही न सके, और उसकी मुहब्बत तमाम दूसरी मुहब्बतों को कुचल कर समाप्त कर दे।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी ऐसी आयत से गुजरते जिसमें कुछ माँगने का ज़िक्र होता, तो आप भी माँगते, और जब ऐसी आयत से गुजरते जहाँ खुदा तआला की पनाह माँगने का उल्लेख होता, तो आप पनाह माँगते।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ मुहम्मद की उम्मत! खुदा की क़सम, अगर तुम वह जान लो जो मैं जानता हूँ, तो तुम बहुत अधिक रोते और बहुत कम हँसते।

हर एक श्रेष्ठता की कुंजी उसी को दी गई है और हर एक ज्ञान का ख़ज़ाना उसी को प्रदान किया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता, वह सदा के लिए वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम बड़े कृतघ्न होंगे यदि हम यह स्वीकार न करें कि सच्ची एकेश्वरता हमें इसी नबी के माध्यम से मिली, और जीवित खुदा तआला की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी और उसके नूर से प्राप्त हुई है, और खुदा तआला के संवाद और संबोधन का वह सम्मान भी, जिसके द्वारा हम उसका चेहरा देखते हैं, उसी महान नबी के माध्यम से हमें प्राप्त हुआ है।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अगर एकेश्वरता का पता लगाना है, खुदा तआला के अस्तित्व को पहचानना है, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा को गहराई में जाकर देखना होगा। क़ुरआन-ए-करीम को समझना होगा।

सच बात यही है कि जब तक मनुष्य जीवित खुदा तआला की जीवित शक्तियों का अनुभव नहीं करता, शैतान उसके दिल से नहीं निकलता, न सच्ची एकेश्वरता उसके दिल में प्रवेश करती है, और न वह निश्चित रूप से खुदा तआला के अस्तित्व को मान सकता है। और यह पवित्र और पूर्ण एकेश्वरता केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही मिलती है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इबादतों का मन को छू लेने वाले और अत्यंत आकर्षक अंदाज़ में वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 जनवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का वर्णन हो रहा है। पिछले ख़ुत्बों में मुहब्बत-ए-इलाही का वर्णन चल रहा था और उसी सिलसिले में आज भी मैं कुछ और बातें बयान करूँगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इबादत का तरीका और उसकी सुंदरता का कुछ वर्णन पहले भी हो चुका है। आज भी हदीसों के हवाले से और इसी तरह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे ग़ुलाम हैं, उन्होंने जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऊँचे स्थान और अल्लाह तआला से आपके प्रेम की तस्वीर पेश की है, उसके भी कुछ हवाले बयान करूँगा।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने एक रात नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी। आपने सूरह बक़रह से शुरुआत की। मैंने सोचा कि आप सौ आयतों पर रुकू करेंगे, लेकिन आप आगे पढ़ते रहे। फिर मैंने सोचा कि पूरी सूरत खत्म करके रुकू करेंगे, लेकिन आप आगे बढ़ गए। फिर मैंने सोचा कि अब रुकू करेंगे, लेकिन आपने सूरह आले-इमरान शुरू कर दी और उसे पढ़ा। फिर सूरह निसा शुरू की और उसे भी पढ़ा।

आप बहुत ठहर-ठहर कर, धीरे-धीरे तिलावत करते थे। जब ऐसी आयत आती जिसमें तस्बीह का ज़िक्र होता तो आप तस्बीह करते। जब किसी माँगने वाली आयत से गुजरते तो दुआ करते। और जब ऐसी आयत आती जिसमें अल्लाह तआला की पनाह माँगने का ज़िक्र होता, तो पनाह माँगते।

फिर आपने रुकू किया और फ़रमाया: सुब्हान रब्बियाल अज़ीम मेरा रब महान है और हर तरह की कमी से पाक है। आपका रुकू आपके क़ियाम जितना लंबा होता था, बहुत लंबा रुकू था। फिर आपने फ़रमाया: समीअल्लाहु लिमन हमिदहू अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की। फिर आपने लंबा क़ियाम किया, जो रुकू के लगभग बराबर था। फिर सज्दा किया और फ़रमाया: सुब्हान रब्बियाल अअला मेरा रब बहुत ऊँचा और पाक है। आपका सज्दा भी क़ियाम के लगभग बराबर होता था।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 3, पृष्ठ 270-271, किताब सलातुल मुसाफिरीन व क़सरहा, बाब इस्तेहबाब तवील क़िराअत…, हदीस 1283, नूर फ़ाउंडेशन)

यह था आपका नफ़्ल पढ़ने का तरीका, जिसे एक मौक़े पर एक सहाबी ने देखा।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि एक रात नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन मजीद की एक ही आयत पढ़ते हुए पूरी रात क़ियाम किया।

(सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुस्सलात, बाब मा जा फ़िल क़िराअत बिल्लैल, हदीस 448)

यानी सूरह फ़ातिहा के बाद एक ही आयत को बार-बार पढ़ते रहे।

वहाँ एक सहाबी की रिवायत है कि कई लंबी-लंबी सूरतें पढ़ीं, और यहाँ एक ही आयत पर लंबा क़ियाम किया। आपके क़ियाम की लंबाई कितनी होती थी? इसके बारे में हज़रत आयशा की रिवायत पहले भी आ चुकी है। पिछले

ख़ुत्बों में बताया जा चुका है कि क़ियाम, रुकू और सज्दा इतने लंबे होते थे कि उनकी सुंदरता का बयान नहीं किया जा सकता।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब काना न्नबी तनामु अइनहु वला यनामु क़ल्बहु, हदीस 3569)

इसी तरह हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इबादत के लिए खड़े हुए और एक आयत को सुबह तक बार-बार पढ़ते रहे। वह आयत थी:

इन् तुअज़्ज़िब्हुम फ़इन्नहुम इबादुक, व इन् तग़फ़िर लहुम फ़इन्नक अन्तल अज़ीज़ुल हकीम।

अर्थात यदि तू उन्हें सज़ा दे, तो वे तेरे ही बंदे हैं; और यदि तू उन्हें माफ़ कर दे, तो तू पूर्ण प्रभुत्व वाला और हिकमत वाला है।

(सुनन इब्न माजा, किताब इक़ामतुस्सलात वस्सुन्नह फ़ीहा, बाब मा जा फ़िल क़िराअत फ़ी सलातिल् लैल, हदीस 1350)

अल्लाह तआला से गहरी मुहब्बत की वजह से उसकी मख़लूक़ और बंदों के लिए जो हमदर्दी आपके दिल में थी, उसी कारण आप उनकी मग़फ़िरत की दुआ करते रहे। आप जानते थे कि अल्लाह तआला सज़ा देने पर भी क़ादिर है, लेकिन आप दुआ करते थे कि वह माफ़ कर दे क्योंकि यह दुआ भी अल्लाह तआला ने ही सिखाई है।

फिर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में सूरज को ग्रहण लगा। आप नमाज़ के लिए खड़े हुए। ग्रहण की नमाज़ में आपने बहुत लंबा क़ियाम किया। फिर रुकू किया और बहुत लंबा रुकू किया। फिर सिर उठाकर लंबा क़ियाम किया, जो पहले से थोड़ा कम था। फिर रुकू किया, वह भी लंबा, लेकिन पहले से कम। फिर सज्दा किया। फिर क़ियाम किया, वह भी लंबा लेकिन पहले से कम। फिर रुकू किया, वह लंबा लेकिन पहले से कम। फिर खड़े हुए और लंबा क़ियाम किया, पहले से कम। फिर रुकू किया, लंबा लेकिन पहले से कम। फिर सज्दा किया।

जब नमाज़ ख़त्म हुई तो सूरज साफ़ हो चुका था। फिर आपने लोगों को ख़ुत्बा दिया। अल्लाह की हम्द और उसकी तारीफ़ की। फिर फ़रमाया:

सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं। ये किसी के मरने या जन्म लेने से ग्रहण में नहीं आते। जब तुम इन्हें देखो तो अल्लाह की महानता बयान करो, उससे दुआ करो, नमाज़ पढ़ो और सदक़ा दो।

फिर फ़रमाया: ऐ मुहम्मद की उम्मत! अल्लाह तआला से बढ़कर कोई भी गैरत वाला नहीं कि उसका बंदा या उसकी बंदी ज़िना करे। यह बहुत ही दिल को हिला देने वाली चेतावनी है कि गुनाहों में पड़कर अल्लाह तआला की गैरत को न भड़काओ। उससे रहम माँगो और उसकी गैरत को भड़काने से बचो।

फिर आपने फ़रमाया: हे मुहम्मद की उम्मत! ख़ुदा की क़सम, अगर तुम वह जान लो जो मैं जानता हूँ, तो तुम बहुत ज़्यादा रोते और बहुत कम हँसते।

फिर आपने फ़रमाया: सुनो! क्या मैंने पहुँचा दिया?

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 4, पृष्ठ 58-59, किताबुल कुसूफ़, बाब सलातुल कुसूफ़, हदीस 1490, नूर फ़ाउंडेशन)

यानी संदेश तुम्हें पहुँचा दिया।

इस तरह आपने लोगों को अल्लाह तआला की ओर लौटने, उसकी इबादत करने और उसके सामने झुकने की ओर ध्यान दिलाया और फ़रमाया कि इसी में तुम्हारी बाक़ा है, इसी में तुम्हारी ज़िंदगी है। अगर तुम्हें इन बातों की गहराई का पता हो, जैसा मुझे है, तो तुम हँसना छोड़ देते, ज़्यादा रोते और अल्लाह तआला से दुआ करते। इस तरह आपने ध्यान दिलाया कि हमें भी दुआओं पर बहुत ध्यान देना चाहिए और अल्लाह तआला से खास संबंध बनाना चाहिए।

मैदान-ए-जंग में दुआ के बारे में एक रिवायत आती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने मुझे बताया कि बद्र के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुशरिकों को देखा वे एक हज़ार थे और आपके सहाबी तीन सौ उन्नीस थे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़िबला की ओर रुख किया, दोनों हाथ फैलाए और अपने रब को ऊँची आवाज़ में पुकारते रहे:

अल्लाहुम्म अन्ज़िज़ ली मा वअद्तनी, अल्लाहुम्म आतिनी मा वअद्तनी, अल्लाहुम्म इन् तुह्लिक हाज़िहिल इसाबह मिन अह्लिल इस्लाम ला तुअबद फ़िल अरज़।

हे अल्लाह! जो तूने मुझसे वादा किया है उसे पूरा कर।

हे अल्लाह! जो तूने वादा किया है मुझे दे दे।

हे अल्लाह! अगर मुसलमानों के इस समूह को तूने नष्ट कर दिया तो धरती पर तेरी इबादत नहीं की जाएगी।

आप लगातार दुआ करते रहे, यहाँ तक कि आपकी चादर कंधे से गिर गई। अर्थात दुआ करते हुए रोने और विनती की हालत में आपका शरीर भी हिल रहा था, इसलिए चादर गिर गई।

तब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए, चादर उठाकर आपके कंधों पर रख दी और पीछे से लिपट गए। उन्होंने फ़रमाया: ऐ अल्लाह के नबी! आपके रब के सामने आपकी यह विनती और रोकर की गई दुआ ही काफ़ी है। वह अपना वादा ज़रूर पूरा करेगा।

इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की:

इज़ तस्तगीसूना रब्बकुम फ़स्तजाब लकुम अन्नी मुमिद्दुकुम बि अल्फ़िम मिनल मलाइकि मुर्दिफ़ीन।

याद करो जब तुम अपने रब से मदद माँग रहे थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते भेजूँगा, कतार दर कतार।

इस तरह अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिये आपकी मदद फ़रमाई।

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद, जिल्द 9, पृष्ठ 150-151, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब अल-इमदाद बिल मलाइका फ़ी ग़ज़वत बद्र..., हदीस 3295, नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

"क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को काफ़िरों पर विजय मिलने का वादा दिया गया था। लेकिन जब बद्र की लड़ाई शुरू हुई, जो इस्लाम की पहली लड़ाई थी, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रोने लगे और दुआ करने लगे। दुआ करते-करते आपके मुँह से ये शब्द निकले:

अल्लाहुम्म इन अहलकता हाज़िहिल इसाबह फलन तुअबद फ़िल अरज़ अबदन

हे मेरे ख़ुदा! अगर आज तूने इस जमाअत को (जो केवल तीन सौ तेरह आदमी थे) या कुछ रिवायतों के अनुसार तीन सौ उन्नीस नष्ट कर दिया, तो फिर क़ियामत तक कोई तेरी बंदगी नहीं करेगा।

जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह से ये शब्द सुने तो अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप इतने बेचैन क्यों हो रहे हैं? ख़ुदा तआला ने तो आपको पक्का वादा दिया है कि मैं विजय दूँगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह सच है, लेकिन मुझे उसकी बेनियाज़ी का भी ख़याल है। अर्थात किसी वादे को पूरा करना ख़ुदा तआला पर अनिवार्य नहीं होता।

अब समझना चाहिए कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अदब और रबूबियत का इतना ख़याल रखा, तो फिर सभी नबियों अलैहिमुस्सलाम के इस मान्य सिद्धांत से मुँह क्यों मोड़ा जाए कि कभी ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी शब्दशः पूरी होती है और कभी रूपक या संकेत के रूप में पूरी होती है।"

(ज़माइम ब्राहीन अहमदिया, भाग पाँचवाँ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 21, पृष्ठ 255-256)

यह घटना बयान करके आपने अपने विरोधियों से भी फ़रमाया, जो आप पर यह आपत्ति करते हैं कि भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं हुईं, कि भविष्यवाणियों के पूरे होने के अलग-अलग तरीके होते हैं। कभी वे सीधे रूप में पूरी होती हैं और कभी दूसरे रूप में, लेकिन ख़ुदा तआला अपने वादे ज़रूर पूरे करता है।

हमें हर हाल में ख़ुदा तआला के सामने झुके रहना चाहिए, ताकि उसकी बेनियाज़ी की वजह से कहीं मदद रुक न जाए। बल्कि उसकी ताइद और नुसरत

हमेशा साथ बनी रहे।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अच्छी तरह समझ लो सच्चे मोमिन वही हैं जो ज़रा भर भी अपनी नेकी का दिखावा नहीं करते और न सत्य को स्वीकार करने में दुनिया से डरते हैं। अगर दुनिया उनके किसी काम से नाराज़ होती है तो वे उसकी परवाह नहीं करते।

कुछ लोग कहते हैं कि सहाबा जितनी मेहनत और रोज़े रखते थे, उतना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से साबित नहीं। सहाबा में से कुछ तो लगभग सन्यास जैसी ज़िंदगी तक पहुँच गए थे। अर्थात उनमें धर्म की ऐसी लगन पैदा हो गई थी कि उन्होंने दुनिया को लगभग छोड़ दिया था।

लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि वे, नऊज़ुबिल्लाह, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बढ़े हुए थे। असल बात यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने ज़बरदस्ती बाहर निकाला था। आप तो ख़ुदा तआला की इबादत और उसकी मुहब्बत में डूबे रहते थे। आपका जीना-मरना ही ख़ुदा तआला के लिए था, लेकिन ख़ुदा तआला ने आपको लोगों के बीच भेजा।

आपकी जो आदत छिपकर इबादत करने की थी, वह समाप्त नहीं हुई थी। किसे पता है कि आप गुप्त रूप से कितनी इबादत और कितनी मेहनत करते थे?

इसी तरह कब्रिस्तान की घटना भी पहले बयान हो चुकी है। उससे आपने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गुप्त इबादत का प्रमाण दिया है। हज़रत आयशा के घर आपकी बारी थी। जब उनकी आँख खुली तो देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ नहीं थे। वे बहुत हैरान हुईं, खोजा पर पता न चला। फिर कब्रिस्तान गईं तो देखा कि आप अत्यंत विनम्रता और आग्रह के साथ दुआ कर रहे थे:

"हे मेरे ख़ुदा! मेरी रूह, मेरी जान, मेरी हड्डियाँ, मेरे रोम-रोम ने तुझे सज्दा किया।"

आपने इसे बयान करके फ़रमाया कि अगर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को यह बात न पता चलती, तो किसे मालूम होता कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने रब के साथ क्या संबंध रखते हैं, कितनी इबादत करते हैं और किस तरह छिपकर इबादत करते हैं। यही हाल आपकी मेहनत और इबादत का था।

ख़ुदा तआला ऐसे लोगों की आदत में छिपकर काम करना रख देता है, इसलिए दुनिया को उनके पूरे हाल का पता नहीं चलता। वे दुनिया के दिखावे के लिए कुछ नहीं करते। जिनसे उनका संबंध होता है, वह हर जगह जानता और देखता है।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 214-215, संस्करण 2022)

यानी वे ख़ुदा तआला की इबादत करते हैं, उससे प्रेम करते हैं और वह हर बात जानता है। वे दिखावे के लिए काम नहीं करते।

फिर आप एक जगह फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुनिया के साधनों और लाभों की स्थिति यह थी कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आपसे मिलने गए। एक लड़के को भेजकर अनुमति ली। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खजूर की चटाई पर लेटे थे। जब हज़रत उमर अंदर आए तो आप उठकर बैठ गए।

हज़रत उमर ने देखा कि घर लगभग खाली है, कोई सजावट नहीं। एक कील पर तलवार टंगी थी और वही चटाई थी जिस पर आप लेटे थे, जिसके निशान आपकी पीठ पर पड़े हुए थे। यह देखकर हज़रत उमर रो पड़े।

आपने पूछा: ऐ उमर! तुझे किस बात ने रुलाया?

उन्होंने फ़रमाया: क़ैसर और किसरा ऐश-आराम में रहते हैं, उनके पास सुख-सुविधाएँ हैं, और आप जो ख़ुदा के रसूल और दोनों जहानों के बादशाह हैं इस हालत में रहते हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

ऐ उमर! मुझे दुनिया से क्या लेना? मैं तो उस मुसाफ़िर की तरह हूँ जो ऊँट पर सवार होकर मंज़िल की ओर जा रहा हो। रास्ता रेगिस्तान का हो, गर्मी बहुत हो, तो किसी पेड़ की छाया में थोड़ी देर आराम करे, और जैसे ही पसीना सूख जाए, फिर चल पड़े।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 228-229, संस्करण 2022)

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि जब ख़ुदा तआला ने आयत उतारी:

व अन्ज़िर अशीरतकल अकरबीन

और अपने सबसे क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ।

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खड़े हुए और फ़रमाया:

ऐ क़ुरैश के लोगो! अपनी जानों को बचाने का प्रयास करो। मैं ख़ुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा। अर्थात अगर तुम नेक काम करोगे, ख़ुदा तआला की ओर झुकोगे, उसकी इबादत करोगे और उसकी मुहब्बत में डूबोगे तो बख़्शे जाओगे, वरना मैं तुम्हारे काम नहीं आऊँगा।

फिर आपने अपने अन्य रिश्तेदारों को संबोधित करके फ़रमाया:

ऐ बनी अब्दे मनाफ! ख़ुदा के सामने मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा।

ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब! मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा।

ऐ रसूलुल्लाह की फूफी सफ़िया! मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा।

और ऐ फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! तुम मेरे माल में से जो चाहो माँग लो, लेकिन ख़ुदा के सामने मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा।

(सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, सूरह अश्शुअरा, बाब व अन्ज़िर अशीरतकल अकरबीन..., हदीस 4771)

यानी तुम्हारी इबादत और ख़ुदा तआला से तुम्हारा संबंध ही तुम्हें बचाएगा।

ख़ुदा तआला से प्रेम के सामने आपको अपनी जान की भी परवाह नहीं थी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रचार करने लगे तो क़ुरैश अबू तालिब के पास गए और फ़रमाया कि अपने भतीजे को हमारे पूज्यों की बुराई करने से रोकें, नहीं तो हम स्वयं रोकेंगे और फिर आप बीच में न पड़ना।

उन्होंने फ़रमाया कि हमने पहले भी आपसे फ़रमाया था, लेकिन आपने नहीं रोका। अब या तो आप उन्हें रोक दें, या हम उनसे और आपसे लड़ेंगे, यहाँ तक कि एक पक्ष नष्ट हो जाए।

जब अबू तालिब ने यह बात कही तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुलाया और फ़रमाया: ऐ मेरे भाई के बेटे! मुझ पर ऐसा बोझ मत डालो जिसे मैं सह न सकूँ।

आपने समझा कि चाचा अब सहायता छोड़ देंगे और आपको क़ुरैश के हवाले कर देंगे। तब आपने फ़रमाया:

चाचा जान! ख़ुदा की क़सम, अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ पर सूरज और बाएँ हाथ पर चाँद रख दें, तब भी मैं अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटूँगा। मैं अपना काम करता रहूँगा, जब तक ख़ुदा उसे पूरा न कर दे या मैं इस प्रयास में नष्ट न हो जाऊँ।

फिर आप उठकर जाने लगे तो अबू तालिब ने पुकारा: ऐ मेरे भतीजे! जो चाहो करो। ख़ुदा की क़सम, किसी कीमत पर भी मैं तुम्हें उनके हवाले नहीं करूँगा।

(अस्सीरतुन्नबविय्या, इब्न हिशाम, पृष्ठ 199-201, मकतबा दारुल कुतुब अल इल्मिय्या, बेरूत, लेबनान)

यह घटना सीरत इब्न हिशाम में लिखी गई है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस घटना को बयान किया है। आप फ़रमाते हैं कि:

"जब ये आयतें उतरीं कि मुशरिक नापाक हैं, गंदे हैं, **शर्रुल बरिय्यह** हैं अर्थात सबसे बुरी मख़लूक हैं मूर्ख लोग हैं, शैतान की औलाद हैं, और उनके पूज्य आग का ईंधन हैं, जहन्नम का ईंधन हैं तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुलाकर अबू तालिब ने फ़रमाया:

ऐ मेरे भतीजे! अब तेरी बातों से क़ौम बहुत भड़क गई है और क़रीब है कि तुझे और मुझे भी मार डालें। तूने उनके समझदारों को मूर्ख फ़रमाया, उनके बुज़ुर्गों को सबसे बुरा फ़रमाया, उनके पूज्य देवताओं को जहन्नम का ईंधन फ़रमाया और सबको गंदा और शैतान की औलाद ठहराया। मैं भलाई के लिए

कहता हूँ कि अपनी ज़बान रोक ले और ऐसा कहना छोड़ दे, वरना मैं क़ौम का मुकाबला नहीं कर सकता।"

इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया:

"ऐ चाचा! यह गाली नहीं, बल्कि सच्ची बात का बयान है, और यही काम है जिसके लिए मैं भेजा गया हूँ। अगर इसके कारण मुझे मरना पड़े तो मैं ख़ुशी से यह मौत स्वीकार करता हूँ। मेरी ज़िंदगी इसी राह के लिए है। मैं मौत के डर से सत्य कहना नहीं छोड़ सकता। और अगर तू अपनी कमज़ोरी या तकलीफ़ के कारण मुझे छोड़ना चाहता है तो छोड़ दे। मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं। मैं ख़ुदा के आदेश पहुँचाने से कभी नहीं रुकूँगा। मेरे मालिक के आदेश मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारे हैं। अगर मैं इस राह में मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि बार-बार जीवित होकर फिर इसी राह में मरता रहूँ। यह डर की बात नहीं, बल्कि मुझे इसमें बहुत आनंद है कि मैं उसकी राह में कष्ट उठाऊँ।"

(इज़ाला-ए-औहाम भाग प्रथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 3, पृष्ठ 110-111)

हज़रत मसलह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इसकी व्याख्या में लिखा है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूरी ज़िंदगी ख़ुदा के प्रेम में डूबी हुई थी। बहुत बड़ी सामूहिक ज़िम्मेदारियों के बावजूद आप दिन-रात इबादत में लगे रहते थे। आधी रात बीतने पर उठकर सुबह तक इबादत करते थे। इसी कारण आपने फ़रमाया कि जब यह सच है कि ख़ुदा ने मुझे अपना क़रीब किया है और अपने फ़ज़्ल से अपना निकटता दी है, तो क्या मेरा कर्तव्य नहीं कि जितना हो सके उसका शुक्र करूँ? क्योंकि शुक्र तो एहसान के बदले ही होता है।

इसी तरह आप कोई बड़ा काम ख़ुदा की अनुमति के बिना नहीं करते थे। जब तक आदेश न मिलता, काम नहीं करते थे। इसलिए हम देखते हैं कि मक्का के लोगों के अत्याचारों के बावजूद आपने मक्का तब तक नहीं छोड़ा जब तक ख़ुदा की ओर से आदेश न मिला।

जब अत्याचार बढ़े तो आपने सहाबा को हबशा हिजरत करने की अनुमति दी। उन्होंने चाहा कि आप भी साथ चलें, लेकिन आपने फ़रमाया कि अभी मुझे ख़ुदा की ओर से अनुमति नहीं मिली। लोग कठिन समय में अपने साथियों को पास रखते हैं, लेकिन आपने अपनी जमाअत को हबशा भेज दिया और स्वयं अकेले मक्का में रहे, क्योंकि ख़ुदा ने अभी हिजरत का आदेश नहीं दिया था।

जब ख़ुदा का कलाम सुनते तो आपकी आँखों से आँसू निकल आते, विशेषकर वे आयतें जिनमें ज़िम्मेदारियों की याद दिलाई जाती थी।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मुझे क़ुरआन पढ़कर सुनाओ। मैंने फ़रमाया: या रसूलुल्लाह! क़ुरआन तो आप पर उतरा है, मैं आपको क्या सुनाऊँ? आपने फ़रमाया: मुझे अच्छा लगता है कि दूसरे भी पढ़कर सुनाएँ।

मैंने सूरह निसा की आयतें पढ़नी शुरू कीं। जब इस आयत पर पहुँचा

"तो क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत से उसके नबी को गवाह बनाकर लाएँगे और तुझे भी तेरी क़ौम पर गवाह बनाकर लाएँगे।"

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: बस करो। मैंने देखा कि आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

(दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन, अनवार-उल-उलूम जिल्द 20, पृष्ठ 382-383)

यह घटना पहले भी बयान की जा चुकी है, लेकिन हर बार सुनने पर ख़ुदा के डर और उसके प्रेम का नया रूप दिखाई देता है।

ख़ुदा के प्रेम के संदर्भ में ताइफ़ की यात्रा में आपके घायल होने की घटना भी इतिहास में दर्ज है। दसवें नबवी वर्ष में अबू तालिब की मृत्यु के बाद जब क़ुरैश ने अत्याचार बढ़ाए तो आप ताइफ़ गए। दस दिन तक इस्लाम का संदेश दिया, लेकिन किसी ने स्वीकार नहीं किया।

जब सरदारों को लगा कि युवक प्रभावित हो सकते हैं तो उन्होंने आवारा लोगों को भड़काया। उन्होंने आप पर पत्थर मारे, यहाँ तक कि आपके पैरों से ख़ून बहने लगा। ज़ैद बिन हारिसा भी साथ थे। वे पत्थरों को अपने ऊपर लेते रहे और उनके सिर पर भी कई घाव आए।

(अत्तबक़ात अल-कुबरा जिल्द 1, पृष्ठ 165, दारुल कुतुब अल इल्मिय्या, बेरूत)

सहीह अल-बुख़ारी में आता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने पूछा: क्या आप पर उहुद के दिन से भी कठिन कोई दिन आया? आपने फ़रमाया: सबसे कठिन दिन वह था जो ताइफ़ में आया। जब मैंने संदेश पहुँचाया और उन्होंने स्वीकार नहीं किया। मैं दुखी होकर लौट रहा था। जब क़र्नुस्सआलिब पहुँचा तो एक बादल ने छाया की। उसमें जिब्रील थे। उन्होंने फ़रमाया: अल्लाह ने तुम्हारी क़ौम का व्यवहार सुन लिया है और पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है जो चाहो आदेश दो।

पहाड़ों के फ़रिश्ते ने फ़रमाया: अगर चाहें तो इन दो पहाड़ों को उन पर गिरा दूँ।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नहीं, मुझे आशा है कि उनकी संतानों में ऐसे लोग पैदा होंगे जो एक ख़ुदा की इबादत करेंगे और किसी को उसका साझी नहीं ठहराएँगे।

(सहीह बुख़ारी, किताब बद्अल ख़लक..., हदीस 3231; फ़रहंग सीरत पृष्ठ 235, संस्करण 2003)

इस प्रकार आपकी दया यहाँ भी प्रबल रही और आपने उस क़ौम को बचा लिया। बाद में फ़तह मक्का के बाद उनकी संतानों ने इस्लाम स्वीकार भी कर लिया।

फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्जे के बारे में फ़रमाते हैं:

"वह सर्वोच्च प्रकाश जो मनुष्य को दिया गया अर्थात पूर्ण मनुष्य को वह फ़रिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चाँद में नहीं था, सूरज में भी नहीं था। वह धरती के समुद्रों, नदियों, लाल, याक़ूत, पन्ना, हीरा और मोती में भी नहीं था। वह किसी भी सांसारिक या आकाशीय वस्तु में नहीं था। वह केवल पूर्ण मनुष्य में था और उस पूर्ण मनुष्य का सर्वोच्च और श्रेष्ठ उदाहरण हमारे स्वामी और नबियों के सरदार, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं।

वह प्रकाश उन्हें दिया गया और उसी अनुपात में उनके समान स्वभाव वाले लोगों को भी अर्थात उनके मानने वालों में जो उनकी सुन्नत का पालन करते हैं, उन्हें भी दिया गया।"

फिर इस बात को स्पष्ट करते हुए कि वह अमानत क्या है जो मनुष्य को दी गई, आप अलैहिस्सलामफ़रमाते हैं:

"और अमानत से अभिप्राय इंसान-ए-कामिल की वे सब शक्तियाँ, बुद्धि, ज्ञान, दिल, जान, इंद्रियाँ, भय, प्रेम, सम्मान, प्रतिष्ठा और सभी आध्यात्मिक व शारीरिक नेमतें हैं।"

ये सारी नेमतें, जो शारीरिक और आध्यात्मिक हैं, "जो ख़ुदा तआला इंसान-ए-कामिल को देता है, और फिर इंसान-ए-कामिल आयत اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا के अनुसार उस सारी अमानत को अल्लाह के सामने लौटा देता है। अर्थात उसमें फना होकर उसे उसकी राह में समर्पित कर देता है..."

अर्थात जो अमानतें अल्लाह तआला ने दी थीं, वे अल्लाह तआला के आदेश पर चलते हुए उसकी प्रसन्नता पाने के लिए अपनी सारी शक्तियाँ ख़र्च कर देते हैं, ताकि उन अमानतों को अदा किया जा सके और अल्लाह तआला का प्रेम और अधिक से अधिक प्राप्त किया जा सके।

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इस प्रकार यह अमानत की वह उच्चतम स्थिति थी जिसे अल्लाह तआला के प्रेम में फना होकर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अदा किया। इसकी व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"यह उच्च, पूर्ण और सबसे बढ़कर दर्जा हमारे सरदार, हमारे स्वामी, हमारे मार्गदर्शक, नबी उम्मी, सच्चे और सत्यापित मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पाया जाता था, जैसा कि खुदा तआला कुरआन करीम में फ़रमाता है:

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ لَا شَرِیْكَ لَہٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ۔

फिर फ़रमाया:

وَاَنَّ ھٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْہُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِہٖ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِہٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۔

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰہُ وَیَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰہُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۔

फिर फ़रमाया:

فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْھِیَ لِلّٰہِ۔

फिर फ़रमाया:

وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔

अर्थात उनसे कह दो कि मेरी नमाज़, मेरी इबादत में प्रयत्न, मेरी कुर्बानियाँ, मेरा जीना और मेरा मरना सब खुदा के लिए और उसकी राह में है। वही खुदा जो सारे जहानों का पालनहार है, जिसका कोई साझी नहीं। मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ अर्थात दुनिया की शुरुआत से अंत तक मेरे जैसा कोई पूर्ण मनुष्य नहीं जो इतना उच्च दर्जे का फना-फिल्लाह हो, जो खुदा तआला की सारी अमानतें उसे लौटा दे।

इस आयत में उन अज्ञानी तौहीद मानने वालों का खंडन है जो यह मानते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की श्रेष्ठता सभी नबियों पर पूरी तरह सिद्ध नहीं। वे कमज़ोर हदीसें पेश करके कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस बात से रोका कि मुझे यूनुस बिन मत्ता से भी अधिक श्रेष्ठ फ़रमाया जाए।

ये अज्ञानी नहीं समझते कि यदि वह हदीस सही भी हो तो वह विनम्रता और नम्रता के तौर पर है, जो हमेशा हमारे सरदार सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आदत थी। हर बात का एक अवसर और स्थान होता है। यदि कोई नेक व्यक्ति अपने पत्र में "अहक़र इबादुल्लाह" लिखे, तो इससे यह निष्कर्ष निकालना कि वह सचमुच पूरी दुनिया, यहाँ तक कि मूर्तिपूजकों और सब पापियों से भी बदतर है कितनी बड़ी मूर्खता और मन की शरारत है।

गौर से देखना चाहिए कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम "पहला मुसलमान" रखता है और सब आज्ञाकारी लोगों का सरदार ठहराता है, और अमानत लौटाने वाला सबसे पहला आपको ठहराता है, तो फिर क्या कुरआन को मानने वाले किसी व्यक्ति को यह अधिकार है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उच्च शान में किसी तरह की आपत्ति करे?

अल्लाह तआला ने ऊपर वर्णित आयत में इस्लाम के कई दर्जे बताए हैं और सबसे ऊँचा दर्जा वही ठहराया है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रकृति को प्रदान किया गया... फिर आगे अनुवाद यह है अर्थात जो आयतें पढ़ी गईं कि अल्लाह जल्ल शानुहू अपने रसूल से कहता है कि उनसे कह दो कि मेरी राह ही सीधी राह है, तुम उसी का अनुसरण करो और अन्य रास्तों पर मत चलो, क्योंकि वे तुम्हें अल्लाह तआला से दूर कर देंगे।

फ़रमाया कि:

"उनसे कह दो कि यदि तुम अल्लाह तआला से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे चलना अपनाओ अर्थात मेरे तरीके पर चलो, जो इस्लाम की उच्चतम सच्चाई है। तब अल्लाह तआला भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा।

उनसे कह दो कि मेरी राह यह है कि मुझे आदेश हुआ है कि मैं अपना पूरा अस्तित्व अल्लाह तआला को सौंप दूँ और स्वयं को रब्बुल आलमीन के लिए शुद्ध कर लूँ अर्थात उसमें फना होकर, जैसे वह रब्बुल आलमीन है, मैं आलमीन का सेवक बन जाऊँ और पूरी तरह उसी का और उसी की राह का हो जाऊँ। इसलिए मैंने अपना पूरा अस्तित्व और जो कुछ मेरा था, अल्लाह तआला का कर दिया। अब कुछ भी मेरा नहीं जो कुछ मेरा है, वह सब उसी का है।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5, पृष्ठ 160-165)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के स्थान और दर्जे की यह उच्च समझ वह थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने दी और आपने हमारे लिए भी बयान की। इसके बावजूद हमारे विरोधी हमें कहते हैं कि हम (नऊज़ुबिल्लाह) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीन करते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अधिक स्थान देते हैं। अल्लाह तआला हर अहमदी को उनके शर से बचाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"मैं हमेशा आश्चर्य से देखता हूँ कि यह अरबी नबी, जिनका नाम मुहम्मद है (हज़ारों दुरूद और सलाम उन पर), कितने उच्च दर्जे के नबी हैं। उनके उच्च स्थान की सीमा नहीं जानी जा सकती और उनकी पवित्र प्रभावशक्ति का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफ़सोस कि जैसा उनके दर्जे को पहचानना चाहिए था, वैसा नहीं पहचाना गया।

वह तौहीद जो दुनिया से खो गई थी, वही एक वीर था जिसने उसे फिर दुनिया में लाया। उसने खुदा से अत्यंत प्रेम किया और मानव जाति की अत्यंत सहानुभूति में उसकी जान पिघल गई। इसलिए खुदा, जो उसके दिल के रहस्य को जानता था, उसे सभी नबियों और सभी पहले-पिछले लोगों पर श्रेष्ठता दी और उसकी इच्छाएँ उसकी जिंदगी में पूरी कीं।

वही हर फ़ैज़ का स्रोत है, और जो व्यक्ति उसके फ़ैज़ को माने बिना किसी श्रेष्ठता का दावा करता है, वह मनुष्य नहीं बल्कि शैतान की संतान है। क्योंकि हर श्रेष्ठता की कुंजी उसे दी गई है और हर ज्ञान का ख़ज़ाना उसे दिया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता, वह सदा से वंचित है।

हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है? हम नेमत के इनकार करने वाले होंगे यदि यह स्वीकार न करें कि सच्ची तौहीद हमने उसी नबी के माध्यम से पाई और जीवित खुदा की पहचान हमें उसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली। और खुदा से संवाद का सम्मान भी, जिसके द्वारा हम उसका चेहरा देखते हैं, उसी महान नबी के माध्यम से हमें मिला है।

यह मार्गदर्शन का सूर्य अपनी किरणें धूप की तरह हम पर डालता है और हम तभी तक प्रकाशमान रह सकते हैं जब तक उसके सामने खड़े हैं।

जो लोग इस गलत विचार पर अड़े हैं कि जो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए या फिर मुरतद हो जाए और तौहीद पर कायम रहे और खुदा को एक माने, वह भी नजात पा जाएगा ऐसे लोग वास्तव में तौहीद की सच्चाई से ही अनजान हैं।

केवल एक मान लेने से नजात नहीं मिल सकती, बल्कि नजात दो बातों पर निर्भर है:

(1) पूरे विश्वास के साथ खुदा तआला के अस्तित्व और एकता पर ईमान लाना।

(2) और ऐसी पूर्ण प्रेम भावना का दिल में बस जाना कि उसके प्रभाव से खुदा तआला की आज्ञा मानना ही जीवन का सुख बन जाए, जिसके बिना वह जी न सके, और उसका प्रेम सभी अन्य प्रेमों को मिटा दे।

यही सच्ची तौहीद है, जो हमारे स्वामी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुकरण के बिना मिल ही नहीं सकती।

क्यों नहीं मिल सकती? इसका उत्तर यह है कि खुदा की सत्ता अत्यंत छिपी हुई है, जिसे मनुष्य की बुद्धि अपने बल पर नहीं जान सकती। कोई तर्कपूर्ण प्रमाण उसके अस्तित्व को पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं कर सकता। बुद्धि केवल इस संसार की रचनाओं को देखकर रचयिता की आवश्यकता का अनुभव करती है, पर आवश्यकता का अनुभव करना अलग बात है और यह निश्चित जान लेना कि वह वास्तव में मौजूद है यह दूसरी बात है।

बुद्धि से केवल इतना पता चलता है कि खुदा है, पर वह कौन है यह नहीं पता चलता। और क्योंकि बुद्धि का मार्ग अधूरा और भ्रमपूर्ण है, इसलिए केवल बुद्धि के सहारे हर दार्शनिक खुदा को नहीं पहचान सकता।

बल्कि बहुत से लोग जो केवल बुद्धि से ख़ुदा को जानना चाहते हैं, अंत में नास्तिक बन जाते हैं। वे धरती और आकाश की रचनाओं पर विचार करके भी लाभ नहीं पाते और ख़ुदा के पूर्ण लोगों का मज़ाक उड़ाते हैं।

वे कहते हैं कि दुनिया में हजारों चीज़ें हैं जिनका कोई लाभ हमें दिखाई नहीं देता और जिनमें कोई ऐसी रचना नहीं दिखती जो रचयिता की ओर संकेत करे। कुछ चीज़ें उन्हें ऐसी लगती हैं जिनके अस्तित्व का कोई तर्क नहीं दिखता वे उन्हें निरर्थक और व्यर्थ मानते हैं।

अफ़सोस, वे नहीं जानते कि किसी चीज़ का ज्ञान न होना, उसके अस्तित्व न होने का प्रमाण नहीं होता। ऐसे लोग इस समय लाखों की संख्या में हैं और आज तो करोड़ों में हैं जो स्वयं को बहुत बुद्धिमान और दार्शनिक समझते हैं और ख़ुदा तआला के अस्तित्व से इनकार करते हैं।

यदि उनके पास कोई मज़बूत तर्क होता तो वे इनकार न करते। यदि कोई निश्चित तर्क उन्हें बाध्य करता तो वे उपहास न करते। इसलिए कोई व्यक्ति दार्शनिकों की नाव पर बैठकर शंकाओं के तूफ़ान से नहीं बच सकता बल्कि अवश्य डूबेगा और शुद्ध तौहीद का स्वाद कभी नहीं पाएगा।

अब सोचो कि यह विचार कितना गलत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम के बिना तौहीद मिल सकती है और मनुष्य नजात पा सकता है।"

इसलिए यदि तौहीद का पता लगाना है, अल्लाह तआला के अस्तित्व को पहचानना है, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा को गहराई से समझना होगा। क़ुरआन-ए-करीम को समझना होगा।

"ऐ नादानो! जब तक ख़ुदा के अस्तित्व पर पूरा यकीन न हो, उसकी एकता पर यकीन कैसे हो सकता है? इसलिए निश्चित रूप से समझ लो कि सच्ची और पक्की तौहीद केवल नबी के माध्यम से ही मिल सकती है। जैसे हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अरब के नास्तिकों और भटके हुए लोगों को हजारों आसमानी निशान दिखाकर ख़ुदा तआला के अस्तित्व का यकीन दिलाया। और आज तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची और पूर्ण पैरवी करने वाले लोग उन निशानों को नास्तिकों के सामने पेश करते हैं।

सच्ची बात यही है कि जब तक मनुष्य जीवित ख़ुदा की जीवित शक्तियों को स्वयं नहीं देखता, शैतान उसके दिल से नहीं निकलता, न सच्ची तौहीद उसके दिल में प्रवेश करती है, और न वह पक्के तौर पर ख़ुदा के अस्तित्व को मान सकता है। और यह पवित्र और पूर्ण तौहीद केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही मिलती है।"

(हकीकतुल वह्य, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 118-121)

और इस युग में इस शिक्षा को खोलकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से बयान किया है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अरब के रेगिस्तानी देश में एक अजीब घटना घटी लाखों मुर्दे कुछ ही दिनों में जीवित हो गए, पीढ़ियों से बिगड़े हुए लोग ख़ुदा तआलीय रंग में रंग गए, आँखों के अंधे देखने लगे, गूँगों की ज़बान पर ख़ुदा तआलीय ज्ञान बहने लगा, और दुनिया में अचानक ऐसा परिवर्तन हुआ जिसे न पहले किसी आँख ने देखा था और न किसी कान ने सुना था।

क्या तुम जानते हो वह क्या था? वह एक फना-फिल्लाह के अंधेरी रातों की दुआएँ थीं, जिन्होंने दुनिया में हलचल मचा दी और ऐसे अद्भुत काम दिखाए जो उस अनपढ़ और निरुपाय व्यक्ति से असंभव प्रतीत होते थे।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ بِعَدَدِ هَمِّهٖ وَغَمِّهٖ وَحُزْنِهٖ لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ وَاَنْزِلْ عَلَيْهِ اَنْوَارَ رَحْمَتِكَ اِلَى الْاَبَدِ

ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनकी आल पर अपनी रहमत, सलामती और बरकत नाज़िल कर। उन सब चिंताओं, दुखों और कष्टों के बराबर जो उन्होंने इस उम्मत के लिए सहन किए, और अपनी रहमत के नूर उन पर सदा के लिए उतारता रह।"

आप अलैहिस्सलामफ़रमाते हैं:

"और मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से भी देख रहा हूँ कि दुआ की प्रभावशक्ति पानी और आग की शक्ति से भी बढ़कर है। बल्कि प्राकृतिक साधनों के क्रम में कोई चीज़ इतनी प्रभावशाली नहीं जितनी दुआ है।"

(बरकातुद दुआ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6, पृष्ठ 10-11)

अल्लाह तआला हमें इस रास्ते पर चलते हुए दुआ करने की भी तौफ़ीक दे। स्वीकार होने वाली दुआओं की तौफ़ीक दे, सच्चे दिल से दुआ करने की तौफ़ीक दे, और वास्तव में हमें ऐसा सच्चा मोमिन बनाए जो दुआ का भी पूरा हक अदा करे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श पर चलने की कोशिश करने वाला भी हो।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 13 फ़रवरी 2026, पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने जीवन के अंतिम समय में यह अधिकार दिया कि यदि चाहें तो संसार में रहें और यदि चाहें तो मेरी ओर आ जाएँ। आपने अर्ज किया ऐ मेरे रब! अब मैं यही चाहता हूँ कि तेरी ओर आ जाऊँ। और आपका अंतिम वचन, जिस पर आपकी पवित्र आत्मा ने विदा ली, यह था **بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى۔** । अर्थात अब मैं यहाँ ठहरना नहीं चाहता। मैं अपने ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा तआला से प्रेम के असंख्य प्रसंग हैं। बल्कि आपका प्रत्येक कर्म और प्रत्येक घटना इस बात का प्रमाण है कि आपके हृदय में हर समय ख़ुदा तआला की प्रेम-धारा समुद्र की तरह उमड़ती रहती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कोई अवसर जाने नहीं देते थे जिसमें ख़ुदा तआला की एकता का उल्लेख न हो। आपके हर शब्द से अल्लाह तआला का प्रेम झलकता था। जब भी आप बोलते, हर शब्द यह प्रकट करता था कि अल्लाह तआला का प्रेम आपके हृदय में पूरी तरह भरा हुआ है। बल्कि आपका हृदय प्रेम से इतना भरा था कि उसके अतिरिक्त वहाँ और कुछ स्थान ही नहीं था।

अल्लाह तआला ने आपसे फ़रमाया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जिस प्रकार तुम ख़ुदा तआला की एकता को पूरी गहराई से समझते हो, अपने मानने वालों को भी बता दो कि कितनी सूक्ष्मता और सावधानी से उन्हें हर बात में ख़ुदा तआला की एकता और उसके प्रेम को स्वीकार करना चाहिए, और दिल की गहराई से उस पर विश्वास रखना चाहिए।

आने वाले संसार में कोई साधन इस प्रकार काम नहीं आएगा। केवल अल्लाह तआला का अनुग्रह ही काम आएगा। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर चलना, आपकी आज्ञा मानना और आपका अनुसरण करना ही वास्तव में लाभ देने वाली बात है वही जिसे अल्लाह तआला ने स्वयं पसंद किया है। क्योंकि अल्लाह तआला ने स्वयं फ़रमाया है:

فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ(आल-ए-इमरान: 32)**

अर्थात लोगों से कह दो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तआला तुमसे प्रेम करेगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने आदर्श प्रस्तुत करके हमें ऐसा मार्ग दिखा दिया जिसमें ख़ुदा तआला के प्रेम की भी चरम सीमा है, अपनी इच्छाओं के नियंत्रण की भी चरम सीमा है, और बलिदान की भी चरम सीमा है। लेकिन साथ ही उसमें बुद्धि और संतुलन का मार्ग भी है और यह भी इसलिए कि अल्लाह तआला का ही आदेश है कि इसी मार्ग को अपनाया जाए।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर अवस्था में ख़ुदा तआला का स्मरण करते रहते थे।

जब रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने कोई वस्तु आती, कोई प्रसन्नता की बात होती, या आपको कोई शुभ समाचार दिया जाता, तो आप तुरंत अल्लाह का धन्यवाद करने के लिए सज्दे में गिर पड़ते।

सुबह की नमाज़ से लेकर सूर्योदय तक अल्लाह का स्मरण करने वालों के साथ बैठना मुझे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से चार दासों को स्वतंत्र करने से अधिक प्रिय है।

और अस्र की नमाज़ से लेकर सूर्यास्त तक अल्लाह का स्मरण करने वालों के साथ बैठना मुझे चार दासों को स्वतंत्र करने से भी अधिक प्रिय है (हदीस)

अल्लाह! क्या ही महान है ख़ुदा तआला के प्रेम की यह स्थिति कि जिसे आप लोगों में भी उत्पन्न कर रहे हैं और स्वयं आपके भीतर भी यह प्रेम अपनी चरम सीमा तक पहुँचा हुआ है।

ख़ुदा तआला के प्रेम के कारण हर समय उसका स्मरण करना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सबसे अधिक प्रिय था।

यह ख़ुदा तआला के प्रेम का ही प्रभाव था कि जीवन के अंतिम क्षण में भी आपकी पवित्र जिह्वा पर उसी सच्चे प्रिय का नाम था।

आखिरी शब्द जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहे, वे थे

اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ुदा तआला से प्रेम का अत्यंत मनोहर और हृदय को आकर्षित करने वाला वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 जनवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा तआला से प्रेम के अनगिनत घटनाएँ मिलती हैं। बल्कि आपका हर काम और हर घटना इस बात को साबित करती है कि आपके दिल में हर समय ख़ुदा की मोहब्बत का एक समंदर उमड़ता रहता था। इसका एक दृश्य हमें ग़ज़वा-ए-उहुद में दिखाई देता है, जहाँ आपकी ख़ुदा से मोहब्बत की तड़प का एक अनोखा और निराला अंदाज़ सामने आता है।

रिवायत में आता है कि हज़रत बराअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ने बयान

किया कि उहुद के दिन हमारा सामना मुशरिकों से हुआ। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता नियुक्त किया और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो को उनका अमीर बनाया। साथ ही ताकीद की कि अपनी जगह से न हटना। अगर तुम देखो कि हम उन पर जीत गए हैं, तब भी न हटना, और अगर देखो कि वे हम पर हावी हो गए हैं, तब भी हमारी मदद के लिए मत आना। अर्थात जीत हो या हार हर हालत में अपनी जगह नहीं छोड़नी।

इस घटना के अंत में साफ दिखाई देता है कि आपके अंदर खुदा की मोहब्बत का कैसा जोश था। रावी बयान करते हैं कि जब लड़ाई शुरू हुई तो दुश्मन भाग गया। यहाँ तक कि मैंने मुशरिक औरतों को पहाड़ों की तरफ भागते देखा। उन्होंने अपनी पिंडलियों से कपड़ा उठा रखा था और उनकी पाजेबें दिखाई दे रही थीं। मुसलमान कहने लगे माल-ए-गनीमत, माल-ए-गनीमत। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें रोका, अर्थात अपने साथियों को रोका और फ़रमाया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे ताकीद की थी कि तुम न हटना, लेकिन वे न माने।

जब वे दर्रे को छोड़कर माल-ए-गनीमत की तरफ आए तो खुदा तआला ने भी उन मुसलमानों से रुख फेर लिया। अर्थात जब लोग दर्रा छोड़कर माल इकट्ठा करने लगे तो खुदा तआला ने उनसे मुँह फेर लिया। लड़ाई का रुख बदल गया, दुश्मन ने फिर हमला किया और सत्तर मुसलमान शहीद हो गए।

फ़रमाया जाता है कि उस दौरान नबी अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने साथियों के साथ पहाड़ी के दामन में पनाह लिए हुए थे कि अबू सुफियान एक ऊँचे स्थान पर चढ़कर पुकारा क्या लोगों में मुहम्मद हैं? आपने फ़रमाया जवाब न दो। फिर उसने फ़रमाया क्या उनमें इब्न अबी क़हाफ़ा है? आपने फ़रमाया जवाब न दो। फिर उसने फ़रमाया क्या उनमें इब्न ख़त्ताब उमर है? जब कोई जवाब न आया तो अबू सुफियान ने फ़रमाया ये सब मारे गए। अगर ज़िंदा होते तो जवाब देते।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हो अपने आप पर काबू न रख सके और पुकार कर फ़रमाया ऐ खुदा के दुश्मन! तूने झूठ फ़रमाया। खुदा ने तेरे मुकाबले के लिए उसे ज़िंदा रखा है जो तुझे ज़लील करेगा।

अबू सुफियान ने नारा लगाया हुबल का बोलबाला हो। जब उसने यह फ़रमाया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेचैन हो गए और फ़रमाया इसका जवाब दो। सहाबा ने अर्ज़ किया हम क्या कहें? आपने फ़रमाया कहो, खुदा सबसे ऊँचा और सबसे बड़ा है।

अबू सुफियान ने फ़रमाया हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए कोई उज़्ज़ा नहीं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इसका जवाब दो। सहाबा ने पूछा क्या कहें? आपने फ़रमाया कहो, खुदा हमारा मददगार है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा-ए-उहुद, हदीस 4043)

यानी जहाँ खुदा तआला की इज़्ज़त और उसकी मोहब्बत का सवाल आया, वहाँ आपने अपनी जान की भी परवाह न की। आपने तुरंत सहाबा को जवाब देने का हुक्म दिया, जबकि पहले हिकमत से जवाब नहीं देना चाहते थे।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इतिहास के हवाले से और भी लिखा है। वे लिखते हैं कि जो सहाबा रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आसपास थे और काफ़िरों के धक्के से पीछे हट गए थे, जब काफ़िर पीछे हटे तो वे फिर रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास इकट्ठा हो गए। उन्होंने आपके मुबारक जिस्म को उठाया, क्योंकि आप बेहोश होकर गिर पड़े थे।

एक सहाबी उबैदा बिन अल-जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दाँतों से आपके सिर में धँसी हुई कील को ज़ोर से निकाला, जिससे उनके दो दाँत टूट गए। थोड़ी देर बाद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को होश आ गया। आप ज़ख्मों की वजह से बेहोश हो गए थे। दुश्मन ने यह मशहूर कर दिया था कि नऊज़ुबिल्लाह आप शहीद हो गए हैं। जब आपको होश आया तो सहाबा ने चारों तरफ लोगों को भेजा कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़िंदा हैं, सब आ जाएँ। मुसलमानों का बिखरा हुआ लश्कर फिर इकट्ठा होने लगा।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें लेकर पहाड़ के दामन में चले गए। जब बचा-खुचा लश्कर वहाँ खड़ा था तो अबू सुफियान ने ज़ोर से आवाज़ देकर फ़रमाया हमने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मार दिया। आपने जवाब न दिया ताकि दुश्मन असलियत जानकर दोबारा हमला न कर दे। दुश्मन समझे कि मुसलमान मरे नहीं बल्कि घायल हैं, और घायल हालत में दोबारा हमला सह नहीं सकेंगे।

जब कोई जवाब न मिला तो अबू सुफियान को यक़ीन हो गया कि उसका अंदाज़ सही है। उसने फिर ज़ोर से फ़रमाया हमने अबू बक्र को भी मार दिया। आपने हज़रत अबू बक्र को भी जवाब देने से रोक दिया। फिर उसने फ़रमाया हमने उमर को भी मार दिया। हज़रत उमर जवाब देना चाहते थे कि हम खुदा के फ़ज़्ल से ज़िंदा हैं, मगर आपने मना कर दिया मुसलमानों को मुश्किल में मत डालो, खामोश रहो। अभी कमज़ोरी की हालत है, हमला हुआ तो ज़्यादा नुकसान होगा।

काफ़िरों को यक़ीन हो गया कि इस्लाम के संस्थापक और उनके दोनों सहायक भी मारे गए हैं। तब अबू सुफियान और उसके साथियों ने खुशी से नारा लगाया उअलु हुबल, उअलु हुबल। हमारे महान बुत हुबल की शान बुलंद हो, उसने आज इस्लाम को खत्म कर दिया।

वही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो अपनी मौत, अबू बक्र की मौत और उमर की मौत के ऐलान पर खामोशी की हिदायत दे रहे थे, ताकि घायल मुसलमानों पर दुश्मन हमला न कर दे जब खुदा-ए-वाहिद की इज़्ज़त का सवाल आया और मैदान में शिर्क का नारा लगाया गया तो आपकी रूह बेचैन हो गई। आपने जोश से सहाबा की तरफ देखकर फ़रमाया तुम जवाब क्यों नहीं देते? सहाबा ने फ़रमाया या रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हम क्या कहें? आपने फ़रमाया कहो: अल्लाहु अअला व अजल्ल। अल्लाहु अअला व अजल्ल। तुम झूठ कहते हो कि हुबल की शान बुलंद हुई। इज़्ज़त केवल खुदा की है, उसकी शान ऊँची है, हुबल की नहीं।

इस तरह आपने अपने ज़िंदा होने की खबर भी दुश्मनों तक पहुँचा दी।

इस दिलेर और बहादुर जवाब का असर काफ़िरों के लश्कर पर इतना गहरा पड़ा कि जबकि उनकी उम्मीदें टूट गईं और सामने मुट्ठी भर घायल मुसलमान थे जिन पर हमला करना दुनियावी हिसाब से आसान था फिर भी वे दोबारा हमला करने की हिम्मत न कर सके। जितनी जीत मिली, उसी की खुशी मनाते हुए मक्का लौट गए।

(उद्धारित दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 252-253)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खुदा तआला की मोहब्बत में शिर्क का ज़रा सा भी असर बर्दाश्त नहीं करते थे।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से बयान है कि एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से फ़रमाया जो खुदा चाहे और आप चाहें। आपने फ़रमाया क्या तुमने मुझे खुदा के बराबर ठहरा दिया? बल्कि यूँ कहो जो खुदा तआला अकेला चाहे।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल कफ़्फ़ारात, बाब: यह कहना मना है कि जो खुदा चाहे और तुम चाहो, हदीस 2117)

शिर्क का ज़रा सा पहलू भी नहीं आना चाहिए। कुछ लोग इस तरह कह देते हैं खुदा चाहे और आप चाहें। हाँ, यह फ़रमाया जा सकता है कि खुदा चाहे और उसके फ़ज़्ल से और दुआ से बरकत हो जाएगी। दुआ तक तो ठीक है, लेकिन "आप चाहें" कहना गलत है, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसे सख्ती से नापसंद किया।

फिर आपको यह चिंता रहती थी कि कहीं लोग कब्रों को पूजा की जगह न बना लें, लेकिन अफ़सोस आज इसके उलट हो रहा है। मुसलमान पीरों-फक़ीरों की कब्रों पर जाकर पूजा करते हैं, सज्दा करते हैं, जबकि आपने कब्रों को मस्जिद बनाने से मना किया है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी उस बीमारी में, जिसमें आपका विसाल हुआ आख़िरी समय में फ़रमाया: खुदा यहूद और नसारा पर लानत करे, उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को मस्जिद बना लिया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: अगर आपने यह न फ़रमाया होता तो आपकी क़ब्र खुली रखी जाती, लेकिन मुझे डर है कि कहीं उसे मस्जिद न बना लिया जाए। इसलिए उसे खुली

जगह नहीं रखा गया, ताकि उसे इबादत की जगह न बना लिया जाए।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब: कब्रों पर मस्जिद बनाने की मनाही, हदीस 1330)

आजकल वहाँ सरकार ने उसके आसपास बाक़ायदा व्यवस्था कर रखी है। लोहे के जंगले हैं, दीवारें हैं ताकि किसी प्रकार का शिर्क दिखाई न दे। कम से कम यह काम उन्होंने अच्छा किया है, क्योंकि इस शिर्क से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत घृणा थी।

ख़ुदा तआला की एकता के बारे में एक रिवायत इस तरह आती है। हज़रत उबै बिन कअब से रिवायत है कि मुशरिकों ने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से फ़रमाया कि अपने रब का वंश हमें बताइए। इस पर ख़ुदा तआला ने नाज़िल फ़रमाया:

कुल हुआल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद।

यानी ख़ुदा एक है। ख़ुदा बेनियाज़ है। वह अकेला और निराला है। न उसने किसी को जन्म दिया और न वह किसी से जन्मा, क्योंकि जो भी पैदा होता है वह मरता है और जो मरता है उसका कोई वारिस होता है। लेकिन ख़ुदा अज़्ज़ व जल न मरेगा, न उसका कोई वारिस होगा और न उसका कोई बराबर है। रावी कहते हैं कि उसका कोई समान नहीं, न कोई उसके बराबर है और न उसके जैसा कोई है।

(सुनन तिर्मिज़ी, अबवाब तफ़्सीरुल क़ुरआन अन रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब: वमिन सूरह इख़लास, हदीस 3364)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कोई अवसर ऐसा नहीं छोड़ते थे जिसमें ख़ुदा तआला की तौहीद का उल्लेख न हो, और आपके हर शब्द से ख़ुदा तआला की मोहब्बत टपकती थी। जब भी आप बोलते, हर शब्द से यही जाहिर होता कि ख़ुदा की मोहब्बत आपके दिल में पूरी तरह भरी हुई है। बल्कि आपका दिल उसी मोहब्बत से भरा था और उसके अलावा वहाँ कुछ नहीं था।

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें हुदैबिया में रात की बारिश के बाद सुबह की नमाज़ पढ़ाई। जब नमाज़ से फ़ारिग हुए तो लोगों की ओर ध्यान करके फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब अज़्ज़ व जल ने क्या फ़रमाया है? ख़ुदा तआला दिलों का हाल जानता है। बारिश देखकर लोगों के मन में जो विचार आए, वह ख़ुदा को मालूम हो गए और उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बता दिया।

लोगों ने फ़रमाया ख़ुदा और उसका रसूल बेहतर जानते हैं। आपने फ़रमाया ख़ुदा कहता है कि मेरे कुछ बंदों ने सुबह इस हाल में की कि वे मुझ पर ईमान लाने वाले थे और कुछ इनकार करने वाले थे। अर्थात कुछ लोगों ने बारिश देखकर फ़रमाया कि यह ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से हुई है वह मुझ पर ईमान लाने वाला है और सितारों का इनकार करने वाला है। उस समय सितारों की पूजा भी होती थी और बहुत से मुशरिक लोग इस्लाम में आए थे, इसलिए कुछ लोग कहते थे कि अमुक सितारे की वजह से बारिश हुई।

जिसने फ़रमाया कि आज सितारों की वजह से बारिश हुई वह मेरा इनकार करने वाला है और सितारों पर ईमान लाने वाला है।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब: इमाम सलाम फेरने के बाद लोगों की ओर मुंह करे, हदीस 846)

इस प्रकार ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जैसे तू ख़ुदा की एकता को पूरी तरह समझता है, वैसे ही अपने ईमान लाने वालों को भी बता दे कि कितनी बारीकी से हर मामले में ख़ुदा की तौहीद और उसकी मोहब्बत का इकरार करना चाहिए और दिल की गहराई से उस पर विश्वास रखना चाहिए।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और पूछा या रसूलुल्ला! वे दो चीज़ें कौन-सी हैं जो जन्नत और जहन्नम को निश्चित कर देती हैं? आपने फ़रमाया जो इस हाल में मरे कि वह ख़ुदा के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता, वह जन्नत में जाएगा। और जो इस हाल में मरे कि वह ख़ुदा का साझी ठहराता था, वह आग में जाएगा।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: जो बिना शिर्क के मरे वह जन्नत में जाएगा..., हदीस 93)

इसलिए आज भी हर पूछने वाले के लिए यही जवाब काफ़ी है कि शिर्क क्या है। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया है कि कारणों पर भरोसा, अपने आप पर भरोसा, अपनी योग्यता पर भरोसा, अपनी दौलत पर भरोसा, अपने परिवार और कबीले पर भरोसा, अपनी संतान पर भरोसा संक्षेप में कोई भी चीज़ जिस पर इंसान ख़ुदा तआला को पहले स्थान पर रखे बिना भरोसा करे और ख़ुदा का नाम लिए बिना भरोसा करे वह शिर्क का दोषी होता है।

(उद्धारित मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 420, संस्करण 2022)

इसलिए हमें हमेशा अपना आत्म-परीक्षण करते रहना चाहिए कि हम शिर्क से बचे रहें। इस पर अमल करें और ख़ुदा तआला की मोहब्बत दिल में बढ़ाते रहें।

फिर एक जगह और भी बारीकी से आपने इस प्रकार फ़रमाया। महमूद बिन लबीद बयान करते हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुझे तुम पर सबसे अधिक जिस चीज़ का डर है, वह छोटा शिर्क है। सहाबा ने पूछा ऐ ख़ुदा के रसूल! छोटा शिर्क क्या है? आपने फ़रमाया रिया, अर्थात दिखावा। क़यामत के दिन ख़ुदा तआला कहेगा जिन लोगों के लिए तुम दुनिया में दिखावा करते थे, उनके पास जाओ और देखो कि क्या वे तुम्हें कोई बदला देते हैं। तुम उनके लिए काम करते थे, तो उनसे ही बदला ले लो।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, जिल्द 7, पृष्ठ 799, हदीस महमूद बिन लबीद, हदीस 24030, मकतबा आलमुल कुतुब, बेरूत)

इसलिए दिखावा और रिया अर्थात लोगों को दिखाने के लिए बनावटी तरीके अपनाना ये बातें ख़ुदा तआला को बहुत नापसंद हैं, क्योंकि ऐसे काम तुम ख़ुदा को ख़ुश करने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को ख़ुश करने के लिए करते हो।

इस गहराई से हमें भी अपने कामों का हिसाब लेना चाहिए, क्योंकि अगले संसार में कोई सहारा काम नहीं आएगा। केवल ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल काम आएगा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल, आपकी आज्ञा का पालन और आपका अनुसरण ही असली सहारा है, जिसे ख़ुदा तआला ने स्वयं पसंद किया है। क्योंकि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है:

फ़त्तबिऊनी युह्बिब्कुमुल्लाह (आल-इमरान: 32)

यानी घोषणा करवा दी कि लोगों से कह दो मेरी आज्ञा का पालन करो, ख़ुदा तआला तुमसे मोहब्बत करेगा।

फिर एक हदीस में आता है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा अज़्ज़ व जल ने उस व्यक्ति के लिए जो उसकी राह में निकलता है यह ज़िम्मेदारी ली है कि या तो उसे उसके सवाब या माल-ए-गनीमत के साथ वापस लौटा दूँगा या उसे जन्नत में दाख़िल करूँगा। अर्थात या जीत मिलेगी, या अगर शहादत मिले तो जन्नत मिलेगी बशर्ते कि उसे मेरे ऊपर ईमान और मेरे रसूलों की सच्चाई ने ही जिहाद के लिए निकाला हो।

यह शर्त है कि ईमान मज़बूत हो, ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञा का पालन और बैअत का हक अदा करते हुए निकला हो। और अगर मुझे यह डर न होता कि मैं अपनी उम्मत को कठिनाई में डाल दूँगा तो मैं हर फ़ौजी दस्ते के साथ जाता। मेरी इच्छा है कि मैं ख़ुदा की राह में मारा जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, फिर मारा जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ और फिर मारा जाऊँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी इच्छा का इस प्रकार वर्णन किया।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब: जिहाद ईमान का हिस्सा है, हदीस 36)

इस हदीस की व्याख्या में हज़रत सैयद वली उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि बुख़ारी की रिवायत है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो यह फ़रमाया: लौला अन अशुक़्क़ा अला उम्मती अर्थात अगर यह ख़याल न होता कि मेरी उम्मत कठिनाई में पड़ जाएगी तो मैं ऐसा करता इसका

मतलब यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अच्छी तरह अनुभव हो चुका था कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूरी तरह पालन करने की बहुत तीव्र इच्छा थी।

अधिकांश लोग ऐसे थे जो आपकी आज्ञा का पालन करना चाहते थे और करते भी थे। आपके उसवा-ए-हसना (उत्तम आचरण) में इतनी आकर्षण शक्ति और प्रभाव था कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने कर्म करते समय भी अपनी उम्मत का ध्यान रखते थे कि कहीं आपका कोई अमल उनके लिए ऐसा रूप न ले ले जो उन्हें अधिक कठिनाई में डाल दे।

यानी अगर आपने हर चीज़ को अनिवार्य कर दिया तो उम्मत कठिनाई में पड़ जाएगी। इसलिए आपने फ़रमाया कि मैं कुछ काम इसलिए नहीं करता ताकि तुम कठिनाई में न पड़ो।

सैयद वली उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो आगे लिखते हैं कि आपको ख़ुदा तआला से प्रेम था। यहाँ तक कि विरोधी भी "अशिक़ा मुहम्मदुन रब्बहू" (मुहम्मद अपने रब से प्रेम करता है) जैसे शब्दों में इसी प्रेम का उल्लेख करते थे। लेकिन इस प्रेम के साथ आपने अपने ऊपर नियंत्रण भी रखा और बुद्धि ने एक क्षण के लिए भी आपका साथ नहीं छोड़ा।

जो लोग अपने कामों में अति कर बैठते हैं, उनके लिए इसमें एक शिक्षा है। अंधाधुंध अपने भावों के पीछे चल पड़ना न तो पूर्ण ईमान की निशानी है और न ही कोई उच्च नेकी है। कुछ लोग कहते हैं कि हमें जोश है, हमें यह करना चाहिए, वह करना चाहिए। ख़ुदा तआला संतुलन पसंद करता है।

मध्यम मार्ग पर स्थिर रहना ही नेकी की पराकाष्ठा है, क्योंकि इसमें अपने मन से संघर्ष करना पड़ता है।

(सहीह बुख़ारी, अनुवाद उर्दू, भाग 1, पृष्ठ 84, किताबुल ईमान, बाब: जिहाद ईमान का हिस्सा है, हदीस 36, नज़ारत इशाअत रब्वा)

इस प्रकार यहाँ अपने मन से संघर्ष भी है और ख़ुदा तआला की मोहब्बत भी है। दोनों को सामने रखकर काम करना है। यह नहीं कि बिना सोचे-समझे चल पड़ें।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने उदाहरण स्थापित करके हमें ऐसा मार्ग दिखा दिया जिसमें ख़ुदा की मोहब्बत की भी पराकाष्ठा है, अपनी इच्छाओं के प्रकट करने की भी सीमा है और त्याग की भी पराकाष्ठा है। लेकिन साथ ही बुद्धि और संतुलित मार्ग भी है और वह भी इसलिए कि ख़ुदा तआला का ही आदेश है कि उसे अपनाओ।

एक रिवायत में आता है कि आपने मुशरिकों से सहायता लेना बहुत नापसंद किया। आपकी पाक पत्नी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बद्र की ओर रवाना हुए। जब आप हर्रतुल वबरह पहुँचे, जो मदीना से पश्चिम की ओर तीन मील दूर है, तो आपको एक व्यक्ति मिला जिसकी वीरता और साहस का बहुत उल्लेख किया जाता था। वह बहुत बहादुर था।

जब सहाबा ने उसे देखा तो बहुत प्रसन्न हुए कि वह हमारे साथ युद्ध में शामिल होगा। जब वह आपसे मिला तो उसने फ़रमाया कि मैं आपके साथ चलने, हिस्सा पाने और आपकी सहायता करने आया हूँ।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे पूछा क्या तुम ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? उसने फ़रमाया नहीं। आपने फ़रमाया वापस लौट जाओ, मैं किसी मुशरिक से सहायता नहीं लूँगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि वह चला गया। फिर जब हम शजरा पहुँचे जो मदीना से सात मील दूर ज़ुलहुलैफ़ा में एक पेड़ था जहाँ से रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एहराम बाँधते थे वहाँ वह व्यक्ति फिर आया और वही बात कही जो पहले कही थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर वही उत्तर दिया लौट जाओ, मैं किसी मुशरिक से सहायता नहीं लूँगा।

फिर वह लौटा और आपको बैदा में मिला जो मक्का और मदीना के बीच ज़ुलहुलैफ़ा से आगे है। वहाँ भी आपने वही पूछा क्या तुम ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? इस बार उसने फ़रमाया हाँ। तब रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अब चलो, अब तुम हमारे साथ चल सकते हो।

इस प्रकार चाहे जैसे भी हालात हों, ख़ुदा तआला की मोहब्बत और उसके लिए सम्मान यह सहन नहीं कर सकता कि किसी मुशरिक से सहायता ली जाए, विशेषकर उस काम में जो केवल ख़ुदा की प्रसन्नता और धर्म के लिए किया जा रहा हो।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब: युद्ध में काफ़िर से सहायता लेना नापसंद है..., हदीस 1817)(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 71, 102, 105, 162)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं:

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखो कैसी गहरी पहचान, कैसी सावधानी, किस प्रकार ख़ुदा तआला से भय रखते थे। जबकि आप सभी मनुष्यों से अधिक पूर्ण थे, हर प्रकार के गुनाह से पाक थे और स्वयं ख़ुदा तआला आपका रक्षक था।

फिर भी यह स्थिति थी कि हर समय ख़ुदा से डरते रहते, नेकी पर नेकी करते, सर्वोत्तम कर्म करते जाते। एक नेकी के बाद दूसरी नेकी करते जाते और बुराई का तो प्रश्न ही नहीं उठता था उसका आभास तक नहीं था। हर समय इबादत में लगे रहते, फिर भी डरते रहते।

अपनी ओर से जितनी संभव हो सावधानी करते, लेकिन जब ख़ुदा की महिमा और उसकी महानता को देखते तो उसके सामने अपने सभी कर्मों से अलग हो जाते, इस्तिग़फ़ार करते और अवसर मिलने पर तौबा करते।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह कहते सुना:

ख़ुदा की क़सम! मैं दिन में सत्तर से अधिक बार ख़ुदा तआला से अपनी कमज़ोरियों की माफी माँगता हूँ और उसकी ओर झुकता हूँ।

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो, भाग 1, पृष्ठ 82)

यह "सत्तर" शब्द अरबी में बहुत अधिक संख्या के अर्थ में भी आता है अर्थात असंख्य बार।

ख़ुदा तआला की मोहब्बत का यह हाल था कि हर समय आपकी पवित्र ज़बान ख़ुदा के ज़िक्र से तर रहती थी।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर हालत में ख़ुदा का ज़िक्र करते थे।

(सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुद्दआवात, बाब: मुसलमान की दुआ स्वीकार होती है, हदीस 3384)

जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बताया है और हदीसों से भी सिद्ध है कि हर समय आपकी ज़बान ख़ुदा के ज़िक्र से तर रहती थी।

हज़रत समुरह बिन जंदब रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया चार बातें सभी शब्दों से श्रेष्ठ हैं। तुम इनमें से किसी से भी शुरुआत करो, कोई हानि नहीं। ये सबसे उत्तम और बड़ी बरकत वाली बातें हैं:

सुभानल्लाह ख़ुदा पवित्र है।

अल्हम्दुलिल्लाह सारी प्रशंसा ख़ुदा के लिए है।

ला इलाहा इल्लल्लाह ख़ुदा के सिवा कोई उपास्य नहीं।

अल्लाहु अकबर ख़ुदा सबसे महान है।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल अदब, बाब: तस्बीह का फ़ज़्ल, हदीस 3811)

ये बातें यदि हमेशा मन में रहें और हर काम करते समय ध्यान में रहें, तो इनमें केवल बरकत ही बरकत है।

इसी प्रकार हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि एक देहाती ने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में फ़रमाया इस्लाम के नियम और नेक काम मेरे लिए बहुत अधिक हो गए हैं। इतने आदेश और नेकी के काम हैं कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बहुत अधिक हैं।

उसने फ़रमाया आप उनमें से कोई ऐसी बात बता दें जिसे मैं विशेष रूप से

अपनाऊँ।

आपने फ़रमाया तुम्हारी ज़बान लगातार खुदा के ज़िक्र से तर रहे।

ला यज़ालु लिसानुका रत्बन मिन ज़िक्रिल्लाहि अज़्ज़ व जल

तुम्हारी ज़बान हमेशा खुदा की याद से तर रहे।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल अदब, बाब: ज़िक्र का फ़ज़्ल, हदीस 3793)

फिर एक रिवायत में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

सबसे श्रेष्ठ ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह है और सबसे श्रेष्ठ दुआ अल्हम्दुलिल्लाह है।

(सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुद्दआवात, बाब: मुसलमान की दुआ स्वीकार होती है, हदीस 3383)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबू उमामह बयान करते हैं कि आँहज़रत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मेरे सामने अल्लाह तआला की तरफ से यह पेशकश की गई कि वह मेरे लिए वादी बठहा अर्थात मक्का को सोने का बना दे। मैंने अर्ज़ किया: ऐ मेरे रब! बल्कि ऐसा हो कि मैं एक दिन पेट भरकर खाना खाऊँ और एक दिन भूखा रहूँ। जब मैं भूखा रहूँगा तो तेरे सामने गिड़गिड़ाऊँगा और तुझे याद करूँगा, और जब पेट भरकर खाऊँगा तो तेरी हम्द और तेरा शुक्र करूँगा।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द 7, पृष्ठ 402, हदीस अबी उमामह अल-बाहिली, हदीस नंबर 22543, मक्तबा आलम अल-कुतुब, बेरूत)

मुझे यह नहीं चाहिए। मुझे तो यह चाहिए कि जहाँ तू हमेशा याद रहे। अगर सोना और दौलत बहुत ज़्यादा हो जाए तो कहीं तेरी याद ही न खत्म हो जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ऊपर जो तंगी या मुश्किल सहन की, या यह कहना चाहिए कि अगर आपकी आर्थिक हालत कमज़ोर थी, तो यह इसलिए नहीं था कि अल्लाह तआला ने आपको दिया नहीं था। अल्लाह तआला ने बहुत कुछ दिया था, लेकिन अल्लाह तआला की मोहब्बत और याद में आपने खुद फ़क्र की ज़िंदगी पसंद की। लेकिन ऐसा भी नहीं कि आप ने नेमतों से इंकार किया हो। अच्छे पके हुए खाने और नेमतें भी खाते थे और उस पर अल्लाह तआला का शुक्र करते थे।

(उद्धारित तफ़्सीर हज़रत मसीह मौऊद, जिल्द 8, पृष्ठ 42-43)

इसी तरह एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबू बक्रह से रिवायत है कि जब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई खुशी की बात पेश आती या कोई खुशखबरी सुनाई जाती, तो आप तुरंत अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए सजदे में गिर पड़ते थे।

(सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जिहाद, बाब फी सजूद अश-शुक्र, हदीस नंबर 2774)

अल्लाह तआला के सामने ही सारी शुक्रगुज़ारी है, और उसकी मोहब्बत और हम्द का यही तकाज़ा है, उसकी बंदगी का यही तकाज़ा है कि उसके सामने तुरंत झुका जाए और उसका शुक्र अदा किया जाए।

हज़रत बराअ बिन आज़िब ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू करो, अर्थात सोने से पहले वुज़ू कर लेना अच्छी बात है। फिर दाहिनी करवट पर लेटो और दुआ पढ़ो। इन दुआओं का अर्थ यह है: ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको तेरे हवाले किया। अपने काम तुझे सौंप दिए और तुझे अपना सहारा बनाया, तुझसे डरते हुए और तुझसे मोहब्बत रखते हुए। तेरे सिवा कोई पनाह की जगह नहीं और न ही कोई बचने की जगह है। बचाव सिर्फ तेरे पास है। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी और तेरे उस नबी पर ईमान लाया जिसे तूने भेजा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह दुआ किया करो। अगर तुम उसी रात मर जाओ तो फ़ितरत पर मरोगे। इसलिए इन शब्दों को अपना आख़िरी कलाम बनाओ।

रावी कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि मैं इन शब्दों को याद कर लूँगा और दोहराते हुए फ़रमाया: "और तेरे उस रसूल पर जिसे तूने भेजा।" मैं यह शब्द भी शामिल कर लूँगा। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नहीं, यूँ कहो: "और तेरे उस नबी पर जिसे तूने भेजामैं उस पर ईमान लाता हूँ।"

(सहीह मुस्लिम, उर्दू अनुवाद, जिल्द 14, पृष्ठ 82-83, किताब अज़-ज़िक्र व दुआ..., बाब मा यक़ूल इंदन-नौम व अख़्ज़ अल-मद्ज़ा, हदीस नंबर 4870, नूर फाउंडेशन)

हज़रत मसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौत से कभी गाफ़िल नहीं रहते थे, और अल्लाह का डर आप पर इतना हावी था कि हर रोज़ यह समझकर सोते कि शायद आज ही मौत आ जाए और आज ही अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होना पड़े। इसलिए आप ऐसे मुसाफ़िर की तरह रहते थे जिसे लगता है कि ट्रेन अभी चली कि चली। वह अपने आपको ऐसे काम में नहीं फँसाता जिसे छोड़ना मुश्किल हो जाए। जैसे कोई आदमी ट्रेन पकड़ने के लिए इंतज़ार करता रहता है कि कहीं देर न हो जाए या ट्रेन निकल न जाएवैसे ही आप हर समय अपने महबूब के पास जाने के लिए तैयार रहते थे। जो समय गुजरता, उसे अल्लाह के फ़ज़्ल का नतीजा समझते और मौत को याद रखते।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान बयान करते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत थी कि जब बिस्तर पर लेटते तो अपना हाथ गाल के नीचे रखते और कहते: ऐ मेरे मौला! मेरा मरना और जीना तेरे ही नाम पर हो। और जब सोकर उठते तो कहते: शुक्र है मेरे रब का जिसने हमें मौत के बाद फिर ज़िंदा किया, और हमें उसी की ओर लौटकर जाना है।

इससे पता चलता है कि आप हर रात बिस्तर पर जाते समय अपना हिसाब पूरा कर लेते और अल्लाह तआला से दुआ करते कि अगर मैं मर जाऊँ तो भी तेरे ही नाम पर मेरी ज़िंदगी हो। और जब उठते तो अल्लाह के एहसान पर उसकी हम्द करते कि मैं तो अपनी तरफ से दुनिया से अलग हो चुका था, तेरे फ़ज़्ल से तूने मुझे फिर ज़िंदा किया और मेरी उम्र में बरकत दी।

जिस तरह ऊपर की दुआ से मालूम होता है कि आप हर समय मौत को याद रखते थे, उसी तरह यह दूसरी दुआ भी गवाही देती है कि आप अपनी ज़िंदगी के हर पल को आख़िरी पल समझते थे। जब सोने लगते तो अपने रब से अपने मामले का फ़ैसला कर लेते और हर बदलाव के लिए तैयार हो जाते।

चुनाँचे बराअ बिन आज़िब की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर लेटते तो दाहिनी करवट लेते और कहते: ऐ मेरे रब! मैं अपनी जान तेरे हवाले करता हूँ, अपनी पूरी तवज्जोह तेरी ओर करता हूँ, अपना मामला तेरे हाथ में देता हूँ और तेरी पनाह में आता हूँ। तुझसे फ़ायदे की उम्मीद रखता हूँ और तेरी महानता से डरता भी हूँ। तेरे ग़ज़ब से बचने की कोई पनाह नहीं, कोई बचाव की जगह नहीं, सिवाय तेरे। मैं उस किताब पर ईमान लाता हूँ जो तूने उतारी और उस रसूल पर जिसे तूने भेजा।

यह दुआ हमें सिखाई गई, और आप खुद भी इसकी बहुत पाबंदी करते थे। हज़रत मसलह मौऊद लिखते हैं कि लोग अपनी दुकान बंद करते समय हिसाब कर लेते हैंरात को कारोबारी अपना लेखा-जोखा पूरा करके सोते हैंलेकिन अल्लाह से जो हिसाब है उसे साफ़ नहीं करते और उसकी परवाह नहीं करते। मगर कितना चुना हुआ वह इंसान था जो सुबह से शाम तक अल्लाह के फ़र्ज़ अदा करने में लगा रहता, खुद भी अदा करता और हज़ारों की निगरानी भी करता कि वे अपने फ़र्ज़ निभा रहे हैं या नहीं। लेकिन रात को सोने से पहले अपनी सारी कोशिशों और इबादतों को भुलाकर बहुत विनम्र होकर अपने मौला के सामने खड़ा हो जाता, जैसे उसने कोई सेवा की ही नहीं। और तब तक नहीं सोता जब तक अपनी जान पूरी तरह अल्लाह के हवाले न कर दे, दुनिया और उसकी हर चीज़ से अलग न हो जाए और अल्लाह के हाथ में अपना हाथ न दे दे।

(सीरतुन्नबी, जिल्द 1, पृष्ठ 83 से 85)

रिवायत में आता है कि हज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करने

वालों के साथ बैठना मुझे हज़रत इस्माईल की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा प्रिय है। और अस्र की नमाज़ से लेकर सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करने वालों के साथ बैठना मुझे चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा प्रिय है।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल इल्म, बाब फ़िल क़िसस, हदीस 3667)

अल्लाह तआला की मोहब्बत की वजह से अल्लाह से प्रेम करने वालों और उसका ज़िक्र करने वालों को हज़रत इस्माईल की औलाद, अपने रिश्तेदारों और अपने क़रीबियों पर भी प्राथमिकता दी गई है। इन सबकी गुलामी तो सहन की जा सकती है, लेकिन यह जुदाई सहन नहीं हो सकती। यह कैसे संभव है कि कहीं अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा हो, उसकी मोहब्बत का ज़िक्र हो रहा हो और मैं उस सभा से दूर हो जाऊँ।

अल्लाह! क्या महान शान है इस इलाही प्रेम की, जो आप लोगों में भी पैदा कर रहे हैं और ख़ुद आपके भीतर भी यह शान अपनी चरम सीमा तक पहुँची हुई है।

फिर अपने मानने वालों को नसीहत करते हुए कि तुम अल्लाह तआला की मोहब्बत और उसके ज़िक्र में हर समय डूबे रहो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह के नज़दीक सबसे प्रिय अमल यह है कि तेरी मौत इस हालत में आए कि तेरी ज़बान उसके ज़िक्र से तर हो।

(अल-जामिअुस सग़ीर, भाग 1, पृष्ठ 19, हरफ़ अल-हमज़ा, हदीस 198, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत 2004)

रिवायत में आता है कि हज़रत अबू दरदा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बताऊँ जो सबसे बेहतर है, तुम्हारे मालिक के नज़दीक सबसे अधिक पवित्र है, तुम्हारे दर्जों को सबसे अधिक ऊँचा करने वाला है, और तुम्हारे लिए सोना-चाँदी ख़र्च करने से भी बेहतर है, बल्कि इससे भी बेहतर है कि तुम दुश्मन से आमने-सामने लड़ो, तुम उनकी गर्दनें मारो और वे तुम्हारी गर्दनें मारेंयानी जंग हो, लड़ाई हो, क़त्ल-ओ-ग़ारत हो, जिसे तुम चाहे जिहाद कह लोउससे भी बेहतर बात वह है जो मैं तुम्हें बताता हूँ।

सहाबा ने अर्ज़ किया: क्यों नहीं। आजकल कुछ मुसलमान कहते हैं कि जिहाद सबसे बड़ा है, गर्दनें काटो। और दुश्मन की गर्दनें नहीं काटते, अपने ही लोगों की गर्दनें काटते हैं, जो सबसे बड़ा गुनाह है। बहरहाल यहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि इससे भी बेहतर वह बात है जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। आपने फ़रमाया: वह अल्लाह का ज़िक्र है। अल्लाह का ज़िक्र करोयह सब जिहादों से बढ़कर जिहाद है।

मुसलमानों पर भी इल्ज़ाम लगाया जाता है, जबकि शिक्षा तो यही है।

हज़रत मुआज़ बिन जबल बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर कोई चीज़ अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली नहीं है।

(सुनन इब्न माजह, किताबुल अदब, बाब फ़ज़्लुज़ ज़िक्र, हदीस 3790)

जब अल्लाह का ज़िक्र होगा तो वह तुम्हें बहुत सी मुसीबतों और सज़ाओं से बचाएगा।

अल्लाह तआला की मोहब्बत की वजह से उसका हर समय ज़िक्र करना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे अधिक प्रिय था।

चुनाँचे रिवायत में आता है कि हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अगर मैं कहूँ "सुब्हानल्लाह" (अल्लाह पाक है), "अलहम्दुलिल्लाह" (सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है), "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं), और "अल्लाहु अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है) तो यह मेरे लिए हर उस चीज़ से ज़्यादा प्रिय है जिस पर सूरज निकलता है।

(सहीह मुस्लिम, उर्दू अनुवाद, जिल्द 14, पृष्ठ 66, किताब अज़-ज़िक्र व दुआ…, बाब फ़ज़्लुत ताहलील व तस्बीह व दुआ, हदीस 4847, नूर फाउंडेशन)

यह इलाही प्रेम का भाव था कि जीवन के अंतिम क्षण में भी आपकी मुबारक ज़बान पर उसी सच्चे प्रिय का नाम था।

इसी कारण हज़रत आयशा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थेऔर उस समय आप स्वस्थ थेकि कोई नबी तब तक नहीं मरता जब तक उसे जन्नत में अपना ठिकाना दिखा न दिया जाए, फिर उसे चुनाव दिया जाता है।

हज़रत आयशा कहती हैं कि जब आपने स्वस्थ अवस्था में यह बात बताई कि उसे जन्नत दिखा दी जाती है, फिर जब आपकी वफ़ात का समय आया और आपका मुबारक सिर मेरी गोद में था, तो आप पर बेहोशी छा गई। फिर होश आया और आपने घर की छत की ओर नज़र उठाई और फ़रमाया: "अल्लाहुम्मा अर-रफ़ीक़ अल-आला" ऐ अल्लाह! रफ़ीक़-ए-आला (सबसे उच्च साथी)।

मैंने फ़रमाया: इससे तो लगता है कि अब आप हमें नहीं चुनेंगे, अब आप अल्लाह के पास जा रहे हैं। मैं समझ गई कि यह वही बात है जो आप पहले बताया करते थे कि चुनाव मिलेगा, तो अब आप अल्लाह के पास जा रहे हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि आख़िरी बात जो आपने कही वह यही थी: "अल्लाहुम्मा अर-रफ़ीक़ अल-आला।"

(सहीह बुखारी, जिल्द 9, पृष्ठ 351, किताबुल मग़ाज़ी, बाब आख़िर मा तकल्लम बिहि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस 4463, नज़ारत इशाअत)

हज़रत आयशा एक और जगह बयान करती हैं कि मुझ पर अल्लाह की नेमतों में से यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन, मेरे सीने और मेरी हंसली के बीच हुई, और यह कि वफ़ात के समय मेरे लार और आपकी लार एक साथ मिली।

वह बताती हैं कि अब्दुर्रहमान मेरे पास आए, उनके हाथ में मिस्वाक थी और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सहारा दिए हुए थी। मैंने देखा कि आप उसकी ओर देख रहे हैं और मैं जानती थी कि आप मिस्वाक पसंद करते हैं। मैंने पूछा: क्या मैं इसे आपके लिए ले लूँ? आपने सिर से इशारा कियाहाँ। मैंने आपको दी तो वह सख़्त थी। मैंने पूछा: क्या मैं इसे नरम कर दूँ? आपने सिर से हाँ फ़रमाया। मैंने उसे नरम किया।

आपके सामने पानी का एक बर्तन थाछोटा या बड़ा, रावी को संदेह हैआप उसमें हाथ डालते और अपने चेहरे पर फेरते और कहते: "ला इलाहा इल्लल्लाह, इन लिल-मौत सक़रात"अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, निश्चय ही मौत की तकलीफ़ें होती हैं।

फिर आपने हाथ उठाया और फ़रमाया: "फ़िर-रफ़ीक़िल-आला"रफ़ीक़-ए-आला की ओर। यहाँ तक कि आपकी वफ़ात हो गई और आपका हाथ नीचे गिर गया।

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मरज़ुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व वफ़ातिहि, हदीस 4449)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अंत समय में यह अधिकार दिया गया था कि यदि चाहें तो दुनिया में रहें और यदि चाहें तो मेरी ओर आ जाएँ। आपने अर्ज़ किया: ऐ मेरे रब! अब मैं यही चाहता हूँ कि तेरी ओर आ जाऊँ। और अंतिम शब्द, जिन पर आपकी पवित्र आत्मा विदा हुई, यही थे'बिर-रफ़ीक़िल-आला'अब मैं यहाँ रहना नहीं चाहता, मैं अपने ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ।"

(नूरुल क़ुरआन, नंबर 2, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 9, पृष्ठ 411)

अल्लाह तआला ने आपको अधिकार दिया कि यदि जीवन चाहें तो मिल सकता है, मगर आपने फ़रमाया कि अब मैं इस दुनिया में रहना नहीं चाहता। इस तरह आप अल्लाह तआला के सामने हाज़िर हो गए।

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिव् व अला आलि मुहम्मदिव् व बारिक् व सल्लिम्, इन्नक हमीदुम् मजीद।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 20 फ़रवरी 2026, पृष्ठ 2 से 8)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान और पद

(मुनीर अहमद ख़ादिम, संपादक साप्ताहिक अख़बार बदर उर्दू, क़ादियान)

اَشْھَدُ اَنْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

○ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ٥ آمین

یُسَبِّحُ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ الْمَلِکِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ ٥ھُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْھُمْ یَتْلُوْا عَلَیْھِمْ اٰیٰتِہٖ وَیُزَکِّیْھِمْ وَیُعَلِّمُھُمُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَۃَ وَاِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ٥ وَّاٰخَرِیْنَ مِنْھُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِھِمْ وَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ٥ذٰلِکَ فَضْلُ اللّٰہِ یُؤْتِیْہِ مَنْ یَّشَآءُ وَاللّٰہُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ٥

(سورۃ الجمعہ آیت نمبر 1تا4)

अल्लाह तआला के नाम के साथ जो अत्यंत रहम करने वाला, बिना मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, सब उसी की तस्बीह करते हैं। वही बादशाह है, अत्यंत पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) हिकमत वाला है। वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा। वह उन पर उसकी आयतों की तिलावत करता है, उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है, जबकि इससे पहले वे स्पष्ट गुमराही में थे। और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले। वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) हिकमत वाला है। यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह तआला बहुत बड़े फ़ज़्ल वाला है।

माननीय अध्यक्ष महोदय और आदरणीय श्रोतागण! इस विनीत सेवक ने अभी जिन आयतों की तिलावत की है, वास्तव में वही इस विनीत सेवक के भाषण का विषय है। जैसा कि आपने सुन लिया है कि इस विनीत सेवक को आदेश हुआ है कि हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थान और पद के बारे में कुछ निवेदन करूँ।

इन आयतों की व्याख्या में हदीस-ए-नबवी का हवाला देते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सहीह हदीस में है कि इस आयत के समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ सलमान फ़ारसी की पीठ पर रखा और फ़रमाया:

"अगर ईमान सुरैया सितारे पर भी लटका हो, तो भी फ़ारस का एक व्यक्ति उसे प्राप्त कर लेगा।" (बुख़ारी)

फ़रमाया: और यह मेरी ही संबंध में भविष्यवाणी थी, जैसा कि ख़ुदा तआला ने बराहीन-ए-अहमदिया में इस भविष्यवाणी की पुष्टि की है। वही हदीस वह्यी के रूप में मुझ पर नाज़िल हुई और वह्यी के अनुसार मुझसे पहले उसका कोई निश्चित उदाहरण निर्धारित नहीं था, और ख़ुदा तआला की वह्यी ने मुझे निर्धारित कर दिया। अल्हम्दुलिल्लाह।

(हक़ीक़त-उल-वह्या, पृष्ठ संख्या 391, हाशिया)

फिर फ़रमाया: "रजल-ए-फ़ारस" और "मसीह मौऊद" एक ही व्यक्ति के नाम हैं, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में इसकी ओर संकेत किया गया है, और वह यह है: "वा आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा में से एक और समूह है जो अभी प्रकट नहीं हुआ। यह तो स्पष्ट है कि सहाबा वही कहलाते हैं जो नबी के समय में हों और ईमान की अवस्था में उनकी संगति से सम्मानित हों तथा उनसे शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करें।

इससे यह सिद्ध होता है कि आने वाली क़ौम में एक नबी होगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बुरूज़ होगा, इसलिए उसके सहाबा, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा कहलाएँगे। और जिस प्रकार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने ढंग से ख़ुदा तआला की राह में दीन की सेवाएँ अदा कीं, निश्चय ही वे भी अपने ढंग से अदा करेंगे।

संक्षेप में यह आयत अंतिम समय में एक नबी के प्रकट होने के संबंध में एक भविष्यवाणी है। अन्यथा कोई कारण नहीं कि ऐसे लोगों को रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा फ़रमाया जाए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद पैदा होने वाले थे और जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा ही नहीं। ऊपर उल्लिखित आयत में यह नहीं फ़रमाया गया "वा आख़रीन मिन अल-उम्मत", बल्कि फ़रमाया गया "वा आख़रीन मिन्हुम" और हर कोई जानता है कि "मिन्हुम" का सर्वनाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ओर लौटता है। अतः वही समूह "मिन्हुम" में शामिल हो सकता है जिसमें ऐसा रसूल मौजूद हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बुरूज़ हो।

(ततिम्मा हक़ीक़त-उल वह्यी)

आदरणीय श्रोतागण! जैसा कि हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आयत "वा आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" की व्याख्या में सहीह बुख़ारी के हवाले से फ़रमाया है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पूर्ण प्रतिबिंब और ज़िल्ली नबी हैं। केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही नहीं फ़रमाया, बल्कि पूर्वकाल के बुज़ुर्गान-ए-उम्मत भी मसीह मौऊद के स्थान और पद के संबंध में ऐसी भविष्यवाणियाँ बयान कर चुके हैं।

चुनाँचे हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं:

"अअज़मुल-अनबिया शानन मन लहु नौअ आखिर मिनल-बअस ऐज़न व ज़ालिक अन यकून मुरादुल्लाह तआला फ़ीहि अन यकून सबबन लिख़ुरूजिन्नास मिनज़-ज़ुलुमात इला नूर व अन यकून क़ौमुहु ख़ैर उम्मत उख़्रिजत लिन-नास फ़यकून बअसुहू यतनावलु बअसन उख़र।"

(हुज्जतुल्लाह अल-बालिग़ा, जिल्द प्रथम, बाब हक़ीक़त-ए-नुबुव्वत, मुद्रित मिस्र, पृष्ठ संख्या 83)

अर्थात सबसे बड़ा नबी दर्जे में वह है जिसकी एक और प्रकार की बेअसत (प्रेषण) भी होगी, और इस दूसरी बेअसत से ख़ुदा तआला की इच्छा यह होगी कि वह सब लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर लाने का कारण बने, और उसकी उम्मत सभी उम्मतों से उत्तम होगी, जो सब लोगों के लिए निकाली गई है। अतः उस नबी की पहली बेअसत दूसरी बेअसत को भी दृढ़ता से अपने साथ लिए हुए होगी।

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी आने वाले इमाम महदी और मसीह मौऊद के स्थान और पद का उल्लेख करते हुए अपनी पुस्तक अल-ख़ैरुल-कसीर में फ़रमाते हैं।

حَقٌّ لَهُ أَنْ يَنْعَكِسَ فِيهِ أَنْوَارُ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيَزْعَمُ الْعَامَّةُ أَنَّهُ إِذَا نَزَلَ إِلَى الْأَرْضِ كَانَ وَاحِدًا مِنَ الْأُمَّةِ كَلَّا بَلْ هُوَ شَرْحٌ لِلِاسْمِ الْجَامِعِ الْمُحَمَّدِيِّ وَنُسْخَةٌ مُنْتَسِخَةٌ مِنْهُ فَشَتَّانَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَحَدٍ مِنَ الْأُمَّةِ"

(الخیر الکثیر صفحہ ۷۲، مطبوعہ بجنور)

अर्थात उम्मत-ए-मुहम्मदिया में आने वाले इमाम महदी और मसीह मौऊद का यह अधिकार है कि उनमें सैय्यदुल-मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नूरों का प्रतिबिंब हो। सामान्य लोग यह समझते हैं कि जब वे पधारेंगे तो केवल एक साधारण उम्मती होंगे यह बिल्कुल सही नहीं है। बल्कि वे नाम-ए-जामे मुहम्मदी की पूरी व्याख्या होंगे और उसकी सच्ची प्रति (True copy) होंगे। इसलिए उनमें और एक सामान्य उम्मती के बीच बहुत बड़ा अंतर होगा।

इमाम अब्दुल रज़्ज़ाक़ काशानी रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं:।

الْمَهْدِيُّ الَّذِي يَجِيءُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ فَإِنَّهُ يَكُونُ فِي الْأَحْكَامِ الشَّرْعِيَّةِ تَابِعًا لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي الْمَعَارِفِ وَالْعُلُومِ وَالْحَقِيقَةِ تَكُونُ جَمِيعُ الْأَنْبِيَاءِ وَالْأَوْلِيَاءِ تَابِعِينَ لَهُ كُلُّهُمْ ....لِأَنَّ بَاطِنَهُ بَاطِنُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ"

(شرح فصوص الحکم مطبوعہ مصر)

अर्थात अंतिम समय में आने वाला महदी शरीअत के आदेशों में तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुयायी होगा, लेकिन ज्ञान, आध्यात्मिक समझ और वास्तविकता के मामले में नबी और औलिया उसके अधीन होंगे, क्योंकि महदी का आंतरिक स्वरूप हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम का ही आंतरिक स्वरूप होगा।

अतः आने वाले इमाम महदी और मसीह मौऊद का वास्तविक स्थान यह है कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्ण बुरूज़ (पूर्ण प्रतिबिंब) हैं। चुनाँचे यह पूर्ण बुरूज़ ठीक भविष्यवाणियों के अनुसार प्रकट हुआ, जिसमें पूर्व नबियों की भविष्यवाणियाँ और दोनों जहानों के सरदार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियाँ भी शामिल हैं। यह सब हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के अस्तित्व में प्रकट हुआ, जिन्होंने खुदा-ए-कुद्दुस की बरकत वाली हस्ती की ओर से यह घोषणा की कि:

"उसने मुझे भेजा है और अपने विशेष इल्हाम से मुझ पर प्रकट किया कि मसीह इब्न मरियम का देहांत हो चुका है। अतः उसका इल्हाम यह है कि मसीह इब्न मरियम, रसूलुल्लाह का देहांत हो चुका है और उसी के रंग में होकर वादे के अनुसार तू आया है और अल्लाह का वादा पूरा होकर रहने वाला है। तू मेरे साथ है और तू स्पष्ट सत्य पर है, और तू सहायक है और तू सही मार्ग पर है।"

(इज़ाला-ए-औहाम, पृष्ठ संख्या 302)

फिर फ़रमाया: इलाही वह्यी के माध्यम से मुझ पर स्पष्ट रूप से खोला गया कि वह मसीह जो उम्मत के लिए प्रारंभ से वादा किया गया था, और वह अंतिम महदी जो इस्लाम के पतन के समय और गुमराही फैलने के दौर में सीधे खुदा से मार्गदर्शन पाने वाला और इस आसमानी भोजन को फिर से इंसानों के सामने पेश करने वाला, तक़दीर-ए-इलाही में निर्धारित किया गया था जिसकी शुभ सूचना आज से तेरह सौ वर्ष पहले रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दी थी वह मैं ही हूँ।

और इलाही वार्तालाप और रहमानी संबोधन इस विषय में इतनी स्पष्टता और निरंतरता के साथ हुए कि संदेह की कोई जगह न रही। हर वह्यी जो होती, वह लोहे की कील की तरह दिल में धँस जाती थी। और ये सारे इलाही वार्तालाप ऐसी महान भविष्यवाणियों से भरे होते थे जो दिन के उजाले की तरह पूरी होती थीं। उनकी निरंतरता, अधिकता और चमत्कारी शक्ति के करिश्मों ने मुझे इस बात को स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया कि यह उसी एकमात्र बे-मिसाल खुदा का वचन है, जिसका वचन क़ुरआन शरीफ़ है।

(तज़किरत-उश-शहादतैन, पृष्ठ संख्या 1, 2 और पृष्ठ संख्या 22)

आदरणीय श्रोतागण! हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि चूँकि आप आयत "वा आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्ण बुरूज़ हैं, इसलिए आपके समय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कार वर्षा की तरह बरसेंगे। अतः यह एक वास्तविकता है कि आपके समय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बरकत वाले चमत्कार वर्षा की तरह प्रकट हुए, और यही आपकी सच्चाई का महान प्रमाण है।

फ़रमाया: इस आयत का अर्थ यह है कि पूर्ण गुमराही के बाद हिदायत और हिकमत पाने वाले तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कार और बरकतों को देखने वाले केवल दो ही समूह हैं।

पहला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा, जो आपके प्रकट होने से पहले घोर अंधकार में थे, फिर खुदा तआला के फ़ज़्ल से उन्होंने नबूवत का समय पाया, अपनी आँखों से चमत्कार देखे, भविष्यवाणियों को पूरा होते देखा, और यक़ीन ने उनमें ऐसा परिवर्तन किया कि मानो वे एक ही आत्मा बन गए।

दूसरा समूह इस आयत के अनुसार सहाबा के समान ही मसीह मौऊद का समूह है। क्योंकि यह समूह भी सहाबा की तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कारों को देखने वाला और अंधकार व गुमराही के बाद हिदायत पाने वाला है।

और आयत "आख़रीन मिन्हुम" में इस समूह को "मिन्हुम" अर्थात सहाबा के समान होने की नेमत देना इसी ओर संकेत है कि जैसे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कार देखे और भविष्यवाणियाँ पूरी होते देखीं, वैसे ही यह लोग भी देखेंगे। और बीच के समय को इस नेमत में पूरा हिस्सा नहीं मिलेगा।

चुनाँचे आज ऐसा ही हुआ कि तेरह सौ वर्ष बाद फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कारों का दरवाज़ा खुल गया और लोगों ने अपनी आँखों से देखा कि रमज़ान में चाँद और सूरज ग्रहण हुआ, जैसा कि हदीस में वर्णित है दारक़ुतनी और इब्न हजर के फ़तवों के अनुसार। अर्थात चाँद ग्रहण अपने ग्रहण की रातों में पहली रात को और सूरज ग्रहण अपने ग्रहण के दिनों के बीच वाले दिन हुआ।

ऐसे समय में जब महदी होने का दावा करने वाला मौजूद था। और यह घटना जब से आकाश और पृथ्वी बने हैं, कभी नहीं हुई थी, क्योंकि इतिहास में कोई भी इसकी मिसाल सिद्ध नहीं कर सका। अतः यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक चमत्कार था जिसे लोगों ने अपनी आँखों से देख लिया।

फिर दो पूँछ वाला तारा भी, जिसके निकलने का उल्लेख महदी और मसीह मौऊद के समय के लिए किया गया था, हज़ारों लोगों ने देखा। इसी प्रकार जावा की आग भी लाखों लोगों ने देखी। इसी प्रकार प्लेग का फैलना और हज से रोका जाना भी सबने अपनी आँखों से देखा। देश में रेल का बनना, ऊँटों का बेकार हो जाना ये सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कार थे, जो इस समय में उसी तरह देखे गए जैसे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखे थे।

इसी कारण अल्लाह जल्ल शानहु ने इस अंतिम समूह को "मिन्हुम" शब्द से पुकारा, ताकि यह संकेत करे कि चमत्कारों को देखने में वे भी सहाबा के ही रंग में हैं। सोचकर देखो कि तेरह सौ वर्षों में ऐसा नबूवत के मार्ग वाला समय और किसने पाया?

इस समय, जिसमें हमारी जमाअत पैदा की गई है, कई कारणों से यह जमाअत सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मिलती-जुलती है। वे चमत्कार और निशान देखते हैं, जैसे सहाबा ने देखे। वे खुदा तआला के ताज़ा निशानों और सहायता से प्रकाश और यक़ीन पाते हैं, जैसे सहाबा ने पाया। वे खुदा की राह में लोगों की हँसी-मज़ाक, अपमान, ताने, दिल दुखाने वाली बातें और रिश्ते तोड़ने जैसी कठिनाइयाँ सहते हैं, जैसे सहाबा ने सहा।

वे खुदा के खुले निशानों, आसमानी सहायता और हिकमत की शिक्षा से पवित्र जीवन पाते जाते हैं, जैसे सहाबा ने पाया। उनमें बहुत से लोग नमाज़ में रोते हैं और सज्दे की जगहों को आँसुओं से भिगो देते हैं, जैसे सहाबा रोते थे। बहुतों को सच्चे सपने आते हैं और इलाही वह्यी से सम्मानित होते हैं, जैसे सहाबा होते थे। बहुत से लोग अपनी मेहनत की कमाई को केवल खुदा की प्रसन्नता के लिए हमारे सिलसिले में खर्च करते हैं, जैसे सहाबा करते थे।

उनमें ऐसे लोग भी मिलेंगे जो मृत्यु को याद रखते हैं, जिनके दिल नरम हैं और जो सच्ची तक़्वा पर चलते हैं, जैसे सहाबा का चरित्र था। वे खुदा का समूह हैं जिन्हें खुदा स्वयं संभाल रहा है, उनके दिलों को दिन-प्रतिदिन पाक कर रहा है, उनके सीने ईमानी हिकमत से भर रहा है और आसमानी निशानों से उन्हें अपनी ओर खींच रहा है, जैसे सहाबा को खींचता था।

संक्षेप में, इस जमाअत में वे सारी निशानियाँ पाई जाती हैं जो "आख़रीन मिन्हुम" शब्द से समझ में आती हैं, और आवश्यक था कि खुदा तआला का फ़रमाया हुआ एक दिन पूरा हो।

(अय्यामुस्सुल्ह, हवाला तफ़्सीर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, तफ़्सीर सूरह अल-जुमुआ, पृष्ठ संख्या 128-129)

सैय्यदना हज़रत अक़्दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पूर्ण बुरूज़ होने का अर्थ स्पष्ट करते हुए समझाते हैं कि आयत "आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" का अर्थ यह है कि...

"हमारे शुद्ध और पूर्ण बंदे केवल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ही नहीं हैं, बल्कि उनके अतिरिक्त भी एक बड़ा समूह अंतिम समय में पैदा होगा। और जैसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की शिक्षा-प्रशिक्षण की, उसी प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस समूह की भी आंतरिक रूप से परवरिश करेंगे। अर्थात वे लोग ऐसे समय में आएँगे जब बाहरी रूप से शिक्षा और लाभ देने-लेने का सिलसिला समाप्त हो जाएगा, और धर्म इस्लाम बहुत-सी गलतियों और नवाचारों से भर जाएगा, तथा फकीरों के दिलों से भी आंतरिक प्रकाश चला जाएगा। तब खुदा तआला किसी भाग्यशाली व्यक्ति को बिना किसी बाहरी माध्यम और तरीकों के केवल नबी करीम की आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा उच्च आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचा देगा और उसे एक बड़े समूह में बदल देगा। और वह समूह सहाबा के समूह से बहुत गहरी समानता रखेगा, क्योंकि वह पूरी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही खेती होगा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़ैज़ उनमें जारी रहेगा।"

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, हवाला तफ़्सीर हज़रत मसीह मौऊद, सूरह अल-जुमुआ)

सम्मानित श्रोतागण! इमाम महदी और मसीह मौऊद का महान दर्जा यह है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों और विरोध के समय में भी इमाम महदी अलैहिस्सलाम के बारे में आदेश दिया कि उन्हें आपका सलाम पहुँचाया जाए और उनकी बैअत की जाए। अतः आपका यह कथन है:

अला इन्न ईसा बिन मरियम लैस बयनी व बैनहू नबी व ला रसूल... (हदीस)

(अल-तबरानी अल-औसत व अस-सगीर, हवाला हदीक़तुस्सालिहीन हदीस नंबर 954)

ध्यान से सुनो! मसीह मौऊद और मेरे बीच कोई नबी नहीं होगा और न कोई रसूल। ध्यान से सुनो कि वह मेरे बाद मेरी उम्मत में मेरा खलीफा होगा। फिर ध्यान से सुनो कि वह दज्जाल को आध्यात्मिक रूप से पराजित करेगा, सलीब अर्थात क्रूसीफिक्शन के विश्वास को तोड़ देगा, जिज्या को समाप्त कर देगा अर्थात धार्मिक युद्ध समाप्त हो जाएँगे। और ध्यान से सुनो जो भी उन्हें पाए, उन्हें मेरा सलाम

पहुँचाए।

इसी प्रकार आपने मुसलमानों को आदेश दिया कि चाहे कैसी भी कठिन परिस्थिति हो, इमाम महदी के पास जाओ और उनकी बैअत करो। फ़रमाया:

फइज़ा रऐतुमूहु फबायिऊहू व लौ हब्वन अलस्सल्ज...

(अबू दाऊद, जिल्द 2, बाब ख़ुरूजुल महदी)

अर्थात ऐ लोगो! जब तुम्हें उसके आने का पता चल जाए तो उसकी बैअत करो, चाहे तुम्हें बर्फ पर घुटनों के बल चलकर जाना पड़े। अर्थात कितनी ही कठिन और विरोधी परिस्थितियाँ क्यों न हों, उसकी बैअत अवश्य करना, क्योंकि वह अल्लाह का खलीफा महदी होगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इन कथनों से इमाम महदी के उच्च दर्जे का पता चलता है कि वह झूठ की ताकतों को समाप्त करेगा, सलीबी विश्वासों को गलत सिद्ध करेगा, धार्मिक युद्धों को समाप्त कर दुनिया में शांति स्थापित करेगा। उसकी बैअत करना आवश्यक होगा, उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सलाम पहुँचाना आवश्यक होगा। और आपने यह भी फ़रमाया कि उसके और मेरे बीच कोई नबी और रसूल नहीं होगा, क्योंकि वह अल्लाह का खलीफा है।

सम्मानित श्रोतागण! हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहली बैअत 23 मार्च 1889 को ली थी। यह बैअत बढ़ते-बढ़ते और फलते-फूलते लगभग सवा सौ वर्षों में दुनिया के दो सौ से अधिक देशों में फैल गई है। पहले खलीफाओं और प्रचारकों के माध्यम से दुनिया के देशों, महाद्वीपों, शहरों और बस्तियों में यह बैअत शुरू हुई, और अब यह बैअत एक ही समय में सैटेलाइट के माध्यम से खलीफा-ए-वक्त के मुबारक हाथ पर की जाती है।

इस बारे में पूर्व विद्वानों की भविष्यवाणियाँ भी थीं। अतः शाह रफीउद्दीन देहलवी अपनी पुस्तक क़ियामतनामा के पृष्ठ 4 पर लिखते हैं:

कि इस घटना की निशानी यह होगी कि इमाम महदी के समय रमज़ान में सूर्य और चंद्र ग्रहण हो चुका होगा। बैअत के समय आसमान से आवाज़ आएगी

"हाज़ा खलीफ़तुल्लाह अल-महदी फ़स्मऊ लहू व अतीऊ"

अर्थात यह अल्लाह का खलीफा महदी है, इसकी सुनो और इसकी आज्ञा मानो। यह आवाज़ खास और आम सभी लोग सुनेंगे।

अल्हम्दुलिल्लाह, यह वैश्विक बैअत हर साल जलसा सालाना यूके के अवसर पर होती है, जिसकी शुरुआत 1993 से हुई और इसे 30 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। हर साल हजारों लोग सिलसिला आलिया अहमदिया में शामिल होते जा रहे हैं और हर साल यही पुकार होती है कि यह अल्लाह का खलीफा महदी है इसकी सुनो और इसकी आज्ञा मानो। यही महदी और मसीह मौऊद का महान दर्जा है जो आज के समय में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को प्राप्त है। आप फ़रमाते हैं:

"मुझे आदेश दिया गया है कि जो लोग सत्य के खोजी हैं, वे सच्चा ईमान, सच्ची आध्यात्मिक पवित्रता और प्रभु प्रेम का मार्ग सीखने के लिए, तथा गंदी परवरिश और आलसी व विश्वासघाती जीवन छोड़ने के लिए मुझसे बैअत करें।"

(इश्तिहार 1 दिसंबर 1888, मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द 1, पृष्ठ 188)

सम्मानित श्रोतागण! आने वाले इमाम महदी और मसीह मौऊद के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संदर्भ से क़ुरआन मजीद में यह भी भविष्यवाणी थी कि उनके समय में इस्लाम को विश्वव्यापी आध्यात्मिक प्रभुत्व मिलेगा। अतः इलाही आदेश है:

हुवल्लज़ी अर्सला रसूलहू बिलहुदा व दीनिल हक़... (पृष्ठ 10)

अर्थात वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर पूर्ण रूप से प्रभुत्व दे दे, चाहे मुशरिकों को कितना ही बुरा लगे।

इस आयत की व्याख्या में पूर्व विद्वानों ने फ़रमाया है कि सभी धर्मों पर इस्लाम की विजय महदी मौऊद और मसीह मौऊद के समय होगी।

तफ़्सीर इब्न जरीर में लिखा है: "यह विजय इमाम महदी के प्रकट होने के समय होगी।"

जामिउल बयान में लिखा है: "यह प्रभुत्व ईसा बिन मरियम के उतरने के समय होगा।"

शिया विद्वानों की प्रसिद्ध पुस्तक बिहारुल अनवार में लिखा है: "यह आयत क़ाइम अर्थात इमाम महदी के बारे में उतरी है।"

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

लगभग 20 वर्ष पहले मुझे इस क़ुरआनी आयत का इल्हाम हुआ था... और मुझे बताया गया कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूँ कि मेरे हाथ से इस्लाम सभी धर्मों पर विजय प्राप्त करे... विद्वानों का सर्वसम्मत मत है कि यह महान भविष्यवाणी मसीह मौऊद के हाथों पूरी होगी... और मुझे बताया गया कि इस आयत का वास्तविक अर्थ तुम हो और तुम्हारे ही समय में इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध होगी।

(तिर्याकुल क़ुलूब पृष्ठ 47)

सम्मानित श्रोतागण! सैय्यदना हज़रत अक़्दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का महान दर्जा यह है कि आप खलीफतुल्लाह हैं, और खलीफतुल्लाह होने के नाते आप नबीउल्लाह हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था:

"मेरे और उसके बीच कोई नबी नहीं होगा।"

और

"अबू बक्र मेरे बाद सबसे श्रेष्ठ है, सिवाय इसके कि कोई नबी हो।"

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 62, पृष्ठ 137-138)

कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में सबसे श्रेष्ठ हैं, सिवाय इसके कि कोई नबी पैदा हो जाए।

आपके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ियामत तक जारी रहने वाली ख़िलाफ़त की शुभ सूचना दी थी। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"तुममें नुबुव्वत कायम रहेगी, जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा। उसके बाद नुबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त कायम होगी, फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा... फिर बादशाहत का दौर आएगा, जब तक अल्लाह चाहेगा वह कायम रहेगा, फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा। फिर नुबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त कायम होगी।" यह फरमा कर आप चुप हो गए।

फिर आपने यह भी फ़रमाया:

"यदि तुम अल्लाह के खलीफा को ज़मीन पर देखो तो उसके साथ मज़बूती से जुड़े रहो, चाहे तुम्हारा शरीर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारा माल छीन लिया जाए।"

(मुस्नद अहमद बिन हनबल, हदीस हुज़ैफ़ा बिन यमान, हदीस नंबर 22916)

सम्मानित श्रोतागण! आज वही खलीफतुल्लाह प्रकट हो चुका है, जिसके स्थान और दर्जे का उल्लेख इस संक्षिप्त भाषण में किया गया है। आज उसी खलीफतुल्लाह के उत्तराधिकारी के माध्यम से इस्लाम की रोशनी दुनिया के 220 देशों में फैल चुकी है और अल्लाह के फ़ज़्ल से दिन-प्रतिदिन फैलती जा रही है।

हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जमाअत को संबोधित करते हुए फ़रमाते हैं:

"यदि आप तरक़्क़ी करना चाहते हैं और दुनिया पर प्रभावी होना चाहते हैं, तो मेरी नसीहत और मेरा यही संदेश है कि आप ख़िलाफ़त से जुड़े रहें और इस 'हबलुल्लाह' को मज़बूती से थामे रखें। हमारी सारी तरक़्क़ी का आधार ख़िलाफ़त से जुड़ाव में ही छिपा है।"

(हवाला बदर, 18/25 दिसंबर 2008, ख़िलाफ़त जुबली नंबर)

फिर आपने यह भी फ़रमाया:

आज दुनिया गहरी अशांति का शिकार है। मुसलमान, मुसलमान से दूर है। अलग-अलग फ़िरक़ों में बँटकर एक-दूसरे के विरुद्ध नफ़रत का शिकार हो रहे हैं। एक ही कलिमा पढ़ने वाले और एक ही नबी की ओर संबद्ध होने के बावजूद एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं। क़ुरआन करीम और हदीस के ख़ज़ाने मौजूद होने के बावजूद आज मुसलमान उस नेतृत्व को पहचानने से वंचित हैं, जिसे ख़ुदा ने उन्हें एक हाथ में इकट्ठा करने के लिए नियुक्त किया है।

आप भाग्यशाली हैं कि आपको इमाम-ए-ज़मां मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के साथ-साथ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से जुड़ने की तौफ़ीक़ मिली है, जो ख़ुदा के फ़ज़्ल से स्थायी है। जितना आपका खलीफा-ए-वक्त से व्यक्तिगत संबंध होगा, उतना ही आप दीन और दुनिया की भलाई में हिस्सा पाएँगे। आपके आपसी संबंध भी बेहतर होंगे, समाज में भी शांति का वातावरण स्थापित होगा। इसलिए इस सुरक्षा के घेरे से लाभ पाने के लिए आप सबको ख़िलाफ़त से अपने संबंध को और अधिक मज़बूत करना होगा, इस्लाम की विजय और विश्व शांति के लिए दुआएँ करनी होंगी, अपने मानकों को ऊँचा उठाना होगा और अपने पदाधिकारियों के साथ सहयोग करते हुए ख़िलाफ़त के हाथ-पाँव और खलीफा-ए-वक्त के लिए सहायक शक्ति बनना होगा।

(हवाला बदर, 18/25 दिसंबर 2008, ख़िलाफ़त जुबली नंबर)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद की बेअसत का उद्देश्य और दीन का पुनरुद्धार

(अज़ीज़ अहमद नासिर, मुर्ब्बी सिलसिला, दफ़्तर मजलिस अंसारुल्लाह भारत)

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَیُزَکِّیۡہِمۡ وَیُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَۃَ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ۔ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ ؕ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ

अनुवाद: वह (खुदा) वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है, जबकि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे। और (उसे) उन्हीं में से दूसरे लोगों की ओर भी भेजा गया है जो अभी उनसे नहीं मिले। और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला और महान हिकमत वाला है।

(सूरह अल-जुमुआ : 3-4)

مسخ دین کی جب ہوگئ تعلیم دنیا میں
ہوئی نوع بشر تقسیم در تقسیم دنیا میں
ہر اک مذہب تھا خواہاں اسکی ہو تکریم دنیامیں
رشی اسکا ہی پھر آئے کر کے تجسیم دنیا میں
مگر اسلام کی قسمت میں یہ زندہ نشان آیا
سبھی نبیوں کے حلیے میں خدا کا پہلوان آیا

अर्थात : जब दीन की शिक्षा दुनिया में बिगड़ गई,
तो मानव जाति बार-बार बँटती चली गई।
हर धर्म चाहता था कि उसकी प्रतिष्ठा हो,
फिर उसी का अवतार बनकर कोई आए।
लेकिन इस्लाम की किस्मत में यह जीवित निशान आया,
सब नबियों के रूप में खुदा का पहलवान आया।

आदरणीय पाठकों! तेरहवीं सदी का अंत और चौदहवीं सदी की शुरुआत वह समय था जो "ज़मीन और समुद्र में फसाद फैल गया" का दृश्य दिखा रहा था। उम्मत अलग-अलग फिरकों में बँट चुकी थी, ईमान दिलों से निकलकर जैसे आसमान के सितारे सैय्या (सुरैया) पर पहुँच गया था। धर्म से जुड़ने का दावा करने वाले लोगों की आध्यात्मिकता दार्शनिकों, नास्तिकों और तथाकथित धार्मिक नेताओं के विचारों और भ्रष्ट मान्यताओं के कारण बिगड़ रही थी। दज्जाली फितने अपने चरम पर थे और अपने झूठे विश्वासों के माध्यम से अपने बुरे उद्देश्यों को पूरा करने में तन-मन-धन से लगे हुए थे।

सभी धर्मों के अनुयायी, विशेषकर मुसलमान, सच्ची शिक्षाओं से दूर होते जा रहे थे। सीधे मार्ग से भटककर गुमराह और खुदा के क्रोध के पात्र लोगों के रास्ते पर चल रहे थे और स्वयं को सुरक्षित समझ रहे थे। और यह सब खुदा तआला और समस्त सृष्टि के सरताज, फख्र-ए-मौजूदात हज़रत ख़ातमन-नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बताई हुई भविष्यवाणियों के बिल्कुल अनुसार हो रहा था।

अल्लाह तआला कुरआन के साथ मुसलमानों के व्यवहार का वर्णन करते हुए फरमाता है:

"और रसूल कहेगा: ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ दिया।" (अल-फुरकान : आयत 31)

इसी तरह आपने फ़रमाया:

"मेरी उम्मत पर एक समय ऐसा आएगा जब लोगों में बहुत बेचैनी फैल जाएगी। तब वे अपने उलमा के पास दौड़ेंगे ताकि वे उनकी परेशानी दूर करें, लेकिन वे उन्हें बंदर और सूअर की तरह पाएँगेजो एक-दूसरे की नकल करते होंगे और गंदगी पर टूट पड़ने वाले होंगे।" (तिर्मिज़ी, बाब-उल-फितन)

जब चौदहवीं सदी की शुरुआत हुई तो मुसलमानों की हालत इतनी खराब हो गई कि उसका वर्णन करना कठिन है। इसका चित्रण करते हुए मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली लिखते हैं:

रहा दीन बाकी न इस्लाम बाकी,
एक इस्लाम का रह गया नाम बाकी।

इसी तरह अल्लामा मुहम्मद इक़बाल कहते हैं:

शोर है हो गए दुनिया से मुसलमान नाबूद,
हम यह कहते हैं कि थे भी कहीं मुसलमान मौजूद।
वेश में तुम ईसाई हो, सभ्यता में हिंदू,
ये मुसलमान हैं जिन्हें देखकर शर्माएँ यहूद।
यूं तो सैयद भी हो, मिर्ज़ा भी हो, अफ़ग़ान भी हो,
तुम सब कुछ हो बताओ क्या मुसलमान भी हो?

इसी समय दुनिया को फिर से एक आध्यात्मिक क्रांति की ज़रूरत थी। इसलिए लोगों को आत्मशुद्धि के माध्यम से और किताब व हिकमत की सच्ची शिक्षा देकर उन्हें सच्चे खुदा से मिलाने के लिए अल्लाह और उसके प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक महान सुधारक के आने की खुशखबरी दी थी।

श्रोतागण! जब "और दूसरे लोग जो अभी उनसे नहीं मिले" वाली आयत उतरी, तो सहाबा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! ये दूसरे लोग कौन हैं जिनमें आपकी दूसरी बेअसत होगी? इस पर आपने उसी सभा में मौजूद हज़रत सलमान फ़ारसी के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया:

"अगर ईमान सुरैया तारे तक भी चला जाए तो इन (फारसी मूल के) लोगों में से एक व्यक्ति या कुछ लोग उसे फिर से दुनिया में स्थापित करेंगे।"

(बुख़ारी, किताब-उत-तफ़सीर, सूरह अल-जुमुआ)

यही वह सुधारक है जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इमाम महदी और मसीह मौऊद के नाम से याद किया। उसे अंदरूनी रूप से उम्मत-ए-मुहम्मदिया की सुधार का काम करना था और बाहरी रूप से अन्य सभी धर्मों पर इस्लाम की सच्चाई को स्पष्ट करते हुए इस दीन को सब झूठे धर्मों पर प्रभुत्व दिलाना था।

इस संबंध में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"ईसा इब्न मरियम के सिवा कोई महदी नहीं।"

(इब्न माजह, बाब शिद्दत-उज़-ज़मान, पृष्ठ 257, मिस्री मतबा इल्मिया, 1313 हिजरी)

और आपने यह भी फ़रमाया:

"तुममें से जो जीवित रहेगा, वह ईसा इब्न मरियम का समय पाएगा। वही इमाम महदी और न्यायप्रिय हाकिम होगा, जो सलीब को तोड़ेगा और सूअर को मारेगा।"

(मुस्नद अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 156)

पाठकों! यह ऐसा समय था जब अंदर और बाहरहर तरह से गुमराही और भटकाव फैला हुआ था। हर धर्म का अनुयायी एक आसमानी सुधारक के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। नेक स्वभाव वाले लोग रो-रोकर, रातों को जागकर आसमान की ओर हाथ उठाते और अपनी बदहाली व बेबसी की पुकार करते हुए खुदा से दुआ करते थेऐ अल्लाह! उस सुधारक को भेज दे, गुमराही का पानी सिर से ऊपर बह रहा है।

मौलवी शकील अहमद सहवानी कहते हैं:

दीन-ए-अहमद का ज़माने से मिटा जाता है नाम,
कहर है ऐ मेरे अल्लाह! यह होता क्या है।
क्यों महदी बरहक प्रकट नहीं होते,
देरी ईसा के उतरने में खुदाया क्या है?

(अल-हक़ सरीह फ़ी हयात-ए-मसीह, पृष्ठ 133)

इसी प्रकार नवाब नूर हसन खान चौदहवीं सदी के आरंभ पर बैठे गहरे दर्द के साथ अनुमान लगाते हुए लिखते हैं:

"इमाम महदी का प्रकट होना तेरहवीं सदी में होना चाहिए था, लेकिन यह सदी पूरी हो गई और महदी नहीं आए। अब चौदहवीं सदी हमारे सिर पर आ गई है। इस सदी को शुरू हुए इस किताब के लिखने तक छह महीने गुजर चुके हैं।

शायद अल्लाह अपना कृपा और दया करेचार या छह साल के भीतर महदी प्रकट हो जाएँ।"

(इक़्तरब-उस-साअत, पृष्ठ 221, सन् 1201 हिजरी)

इसी तरह शिया विद्वान असर फ़िदा बुख़ारी मुसीबतों से छुटकारा दिलाने वाले का इंतेज़ार करते-करते अपनी थकान व्यक्त करते हुए लिखते हैं:

अब इंतेज़ार करते-करते थक गए हैं हम,
दीवार का साया ढलने लगाआइए।
अब आ भी जाइए मेरे प्रतीक्षित इमाम,
मुद्दत से इंतेज़ार में हैं शोक मनाने वालेआइए।

(मआरिफ़-ए-इस्लाम, साहिब-उज़-ज़माँ नंबर, पृष्ठ 26)

अतः ये हालात नेक और सच्ची रूहों के दिलों से आह-ओ-फ़रियाद और सिसकियों की शक्ल में आसमान की ओर उठ रहे थे। उनकी निगाहें, पुकारें और आवाज़ें उस महान आसमानी सुधारक का शिद्दत से इंतेज़ार कर रही थीं, जिसका वादा उम्मत से किया जा चुका था।

पाठकों! यह ऐसा समय था जब ईसाई धर्म और अन्य धर्मों की ओर से इस्लाम जैसे शांतिपूर्ण और पूर्ण धर्म पर लगातार आपत्तियों की वर्षा हो रही थी। मानो सब मिलकर इस्लाम का गला घोंटने पर तुले हुए थे। लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनका जवाब दे सके। हालत यहाँ तक पहुँच गई थी कि मुसलमान इस्लाम जैसे जीवित धर्म को छोड़कर दूसरे धर्मों को स्वीकार करने लगे थे।

इसी अशांत समय में पंजाब के एक छोटे और गुमनाम कस्बे कादियान में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम पैदा हुए। यहीं से आपने इस्लाम की रक्षा का कार्य शुरू किया। अंग्रेजों ने भारत में अपने धर्म के प्रचार के लिए लुधियाना को चुना। सन् 1834 में पादरी जे. सी. लोरी इस काम के लिए लुधियाना पहुँचा। अभी उसे एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ था कि इस मिशन को समाप्त करने के लिए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कादियान में पैदाइश हुई, जिसकी पहले ही हमारे प्यारे आका मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी की थी:

"मसीह मौऊद दज्जाल का पीछा करेगा, यहाँ तक कि उसे बाब-ए-लुद्द पर पाएगा और उसे मार डालेगा।"

यह भविष्यवाणी अपनी पूरी शान के साथ उस समय पूरी हुई जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना में बैअत ली।

श्रोतागण! आपने अपनी पूरी उम्र इस्लाम की रक्षा में लगा दी और सभी धर्मों के विद्वानों को चुनौती दी कि वे आएँ और इस्लाम पर अपनी श्रेष्ठता साबित करें। लेकिन कोई भी आपके मुकाबले में नहीं आया:

आज़माइश के लिए कोई न आया हरचंद,
हर मुखालिफ को मुकाबले पर बुलाया हमने।

आपकी इस्लामी सेवाएँ ईसाइयत, आर्य समाज और ब्रह्मो समाज के खंडन में इतनी ऊँची, महान और शानदार थीं कि डॉक्टर डॉ. इसरार अहमद के शब्दों में "आप उस समय के उलमा की आँखों का तारा बन गए।"

संक्षेप में, इस बेचैनी के समय में खुदा तआला के वादों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार समय की आवश्यकता को पूरा करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद बनकर भेजे गए और आपने घोषणा की:

वक्त था वक्त-ए-मसीहा, न किसी और का वक्त,
मैं न आता तो कोई और ही आया होता।
इब्ने मरियम हूँ मगर उतरा नहीं मैं चर्ख से,
और महदी हूँ मगर बे-तलवार और बे-जंग।

आपने फ़रमाया:

"वल्लाहि इन्नी अनल मसीहुल मौऊद, और मेरे साथ मेरा प्रेममय पालनहार है। खुदा की कसम, वह मुझे नष्ट नहीं करेगा, चाहे पहाड़ जैसी हस्तियाँ मेरी दुश्मन बन जाएँ। खुदा की कसम, वह मुझे नहीं छोड़ेगा, चाहे मेरे मित्र और परिवार मुझे छोड़ दें। खुदा की कसम, वह मेरी रक्षा करेगा, चाहे दुश्मन तेज तलवारों से मुझ पर वार करें।"

(मवाहिबुर्रहमान, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 19, पृष्ठ 271)

पाठकों! यह कितने दुख की बात है कि वही विद्वान जो दिन-रात इस इंतेज़ार में थे कि इमाम महदी और मसीह के प्रकट होने से उम्मत का पतन उत्कर्ष में बदल जाएगा, वही अपने पुराने विश्वासों के कारण विरोधियों की पहली पंक्ति में खड़े हो गए। उन्होंने विरोध का ऐसा तूफ़ान खड़ा कर दिया कि यदि खुदा का सच्चा सुधारक सामने न होता तो वह इस तूफ़ान में बह जाता और उसका नाम-निशान भी न रहता। लेकिन यहाँ खुदा का पहलवान था, खुदा का सच्चा मसीह था, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सच्चा प्रेमी और सेवक था, जिसकी वजह से यह तूफ़ान स्वयं ही समाप्त हो गया।

किसी ने ठीक फ़रमाया है:

याद वह दिन जब कहते थे ये सब अरकान-ए-दीन,
महदी मौऊद का सत्य अब शीघ्र प्रकट होगा।
कौन था जिसकी इच्छा न थी जोश से,
कौन था जिसे उस आने वाले से प्रेम न था।

इस्लाम की सच्चाई और श्रेष्ठता का प्रकट होना

सैय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अपनी बेअसत का उद्देश्य "दीन को पुनः जीवित करना और शरीअत-ए-मुहम्मदी को फिर से स्थापित करना" बताया। दीन का पुनरुद्धार मतलब धर्म को उसकी मूल आत्मा के साथ जीवित करना है। आपने कोई नई शरीअत नहीं लाई और न ही इस्लाम में कोई मूल परिवर्तन किया, बल्कि कुरआन और सुन्नत की असली शिक्षाओं को ताज़ा किया।

आपने तौहीद को मजबूत किया, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत को दिलों में जीवित किया और व्यवहारिक तक़्वा पर ज़ोर दिया। यही सच्चा पुनरुद्धार है धर्म को बिदअतों और गलत धारणाओं से शुद्ध करके उसकी मूल शिक्षा को फैलाना।

आपने दुनिया पर स्पष्ट किया कि इस्लाम ही सच्चा, पूर्ण और जीवित धर्म है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक बराहीने अहमदिया में आपने मजबूत बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रमाणों से क़ुरआन-ए-करीम की सच्चाई सिद्ध की। आपने बताया कि कुरआन एक जीवित किताब है जो आज भी खुदा की ओर से निशान दिखाती है। इस प्रकार आपने इस्लाम को एक व्यावहारिक और आध्यात्मिक धर्म के रूप में प्रस्तुत किया जो केवल सैद्धांतिक शिक्षा नहीं बल्कि जीवित संबंध-ए-खुदा की ओर बुलाता है।

आपकी बेअसत का सबसे पहला और मूल उद्देश्य इस्लाम का पुनरुद्धार था। समय के साथ मुसलमानों में अनेक बिदअतें, अंधविश्वास और कमजोरियाँ पैदा हो गई थीं और कुरआन की सच्ची शिक्षाएँ पीछे छूट गई थीं। आपने अपनी रचनाओं और भाषणों के माध्यम से इस्लाम की सरल, पवित्र और आध्यात्मिक शिक्षा को फिर जीवित किया और स्पष्ट किया कि इस्लाम एक जीवित धर्म है जो हर युग की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। आपने मुसलमानों को कुरआन और सुन्नत की ओर लौटने की शिक्षा दी और बताया कि वास्तविक मुक्ति इसी में है।

जीवित खुदा

आपकी बेअसत का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य तौहीद की स्थापना था। उस समय दुनिया भौतिकवाद, नास्तिकता और शिर्क के विभिन्न रूपों में फँस रही थी। बहुत से लोग खुदा के अस्तित्व से ही इंकार कर रहे थे, जबकि कुछ ने उसके साथ साझी ठहरा रखे थे। आपने मजबूत प्रमाणों और आध्यात्मिक निशानों के माध्यम से खुदा के अस्तित्व और उसकी एकता को सिद्ध किया और लोगों को सच्चे खुदा की ओर बुलाया। आपने बताया कि मनुष्य की वास्तविक खुशी और सफलता खुदा से संबंध में है।

आपने जीवित खुदा का परिचय दिया और पूरे विश्वास के साथ एक पालनहार प्रभु को प्रस्तुत किया। आप फ़रमाते हैं:

"खुदा तआला ने इस समय को अंधकारमय देखकर और दुनिया को लापरवाही, कुफ्र और शिर्क में डूबा देखकर, ईमान, सच्चाई, तक़्वा और सत्यता को नष्ट होते देखकर मुझे भेजा है ताकि मैं फिर से ज्ञान, आचरण, नैतिकता और ईमान की सच्चाई को दुनिया में स्थापित करूँ और इस्लाम को उन लोगों के हमले से बचाऊँ जो दर्शन, प्रकृतिवाद, स्वेच्छाचार, शिर्क और नास्तिकता के रूप में इस

ख़ुदा तआलाीय बाग़ को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 25)

जीवित रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लोगों का संबंध स्थापित करना

अहमदिया सिलसिले के संस्थापक ने आकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान और वास्तविक स्थान को स्पष्ट किया, और ख़ातम-ए-नबुव्वत पर पूर्ण विश्वास की घोषणा की। आपने बताया कि आप ख़ातमुन-नबिय्यीन हैं और आपके बाद कोई नया शरीअत लाने वाला नबी नहीं आ सकता।

आपने स्पष्ट किया कि जो भी आध्यात्मिक उन्नति मिलती है, वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूर्ण अनुकरण से मिलती है। इस प्रकार आपने ख़ातम-ए-नबुव्वत के सिद्धांत को आध्यात्मिक और अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया और बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूर्ण आज्ञाकारिता ही हर आध्यात्मिक उन्नति का साधन है।

यहाँ तक कि आपकी पूर्ण आज्ञाकारिता से मनुष्य नबूवत के स्थान तक भी पहुँच सकता है इसके लिए आपने अपने अस्तित्व को दुनिया के सामने उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया और फ़रमाया:

अहमद की शान कल्पना से भी ऊपर है,
उसका सेवक देखो वही मसीह-ए-ज़माँ है।

इस प्रकार आपने हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के स्थान को उजागर किया और जीवित ख़ुदा के साथ एक जीवित रसूल की सच्चाई दुनिया के सामने रखी।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वह उच्चतम नूर जो मनुष्य को दिया गया अर्थात पूर्ण मनुष्य को वह फ़रिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चाँद में नहीं था, सूरज में भी नहीं था। वह पृथ्वी के समुद्रों और नदियों में भी नहीं था, न लाल, न याकूत, न ज़मर्रुद, न हीरे और न मोती में था। संक्षेप में वह किसी भी स्थलीय या आकाशीय वस्तु में नहीं था। वह केवल मनुष्य में था अर्थात पूर्ण मनुष्य में जिसका सबसे पूर्ण और श्रेष्ठ उदाहरण हमारे स्वामी, समस्त नबियों के सरताज, मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। वही नूर उस मनुष्य को दिया गया और उसके अनुरूप उसके समान रंग वाले लोगों को भी अर्थात उन लोगों को भी जिनमें कुछ उसी प्रकार का रंग हो... और यह महान, पूर्ण और सर्वोच्च गुण हमारे स्वामी, हमारे मार्गदर्शक, सच्चे और सत्यापित नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पाया जाता था।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 165-166)

जीवित किताब से परिचित कराना

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"तुम्हारे लिए एक जरूरी शिक्षा यह है कि कुरआन शरीफ को छोड़ा हुआ न समझो, क्योंकि तुम्हारी जिंदगी उसी में है। जो लोग कुरआन को सम्मान देंगे, उन्हें आसमान पर सम्मान मिलेगा। जो लोग हर हदीस और हर कथन पर कुरआन को प्राथमिकता देंगे, उन्हें आसमान पर प्राथमिकता दी जाएगी। मानव जाति के लिए अब धरती पर कोई किताब नहीं सिवाय कुरआन के, और सब इंसानों के लिए अब कोई रसूल और शफाअत करने वाला नहीं सिवाय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के।"

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 19, पृष्ठ 13)

नूर-ए-फुरकान है जो सब नूरों से उजला निकला,
पाक है वह जिससे अनवार का दरिया निकला।

हयात-ए-मसीह के विश्वास का खंडन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय का एक और महान मिशन, जिसका उल्लेख हदीसों में मिलता है, "यकसरुस्सलीब" था अर्थात आने वाला मसीह सलीब को तोड़ेगा।

तेरहवीं सदी का अंत था और इस्लाम, जिसने हमेशा सहनशीलता और शांति की शिक्षा दी, स्वयं सभी धर्मों के कठोर आरोपों का निशाना बन रहा था। हर तरफ से दुश्मन हमले कर रहे थे। भारत में अंग्रेजी शासन था, जो ईसाई धर्म के प्रचार में बड़े पैमाने पर लगा हुआ था। यहाँ तक कि एक अखबार में प्रकाशित हुआ:

"जिस गति से भारत की सामान्य आबादी बढ़ रही है, उससे चार-पाँच गुना तेज गति से ईसाई धर्म इस देश में फैल रहा है, और इस समय भारतीय ईसाइयों की संख्या दस लाख तक पहुँच चुकी है।"

(दि मिशनरी, लेखक रेवरेन्ड रॉबर्ट क्लार्क)

समय पुकार-पुकार कर कह रहा था कि सलीबी विचार अपने चरम पर हैं, इसलिए उन्हें तोड़ने के लिए कोई आने वाला आए। अतः 1890 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर यह प्रकाश डाला गया:

"मसीह इब्ने मरियम, अल्लाह के रसूल, का देहांत हो चुका है, और उसके रंग में होकर वादे के अनुसार तू आया है।"

आपने घोषणा की:

क्यों नहीं लोगो तुम्हें सत्य का विचार,
दिल में उठते हैं मेरे सैकड़ों ज्वार।
इब्ने मरियम मर गया सत्य की कसम,
जन्नत में गया वह सम्मानित पुरुष।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं फ़रमाते हैं कि मैं पंद्रह वर्ष का था, तभी से ईसाइयों से मेरे वाद-विवाद शुरू हो गए। ईसाइयों पर प्रमाण पूरा करने का इतना जोश था कि आप फ़रमाते हैं:

"उनके धर्म का एक ही स्तंभ है कि मसीह इब्ने मरियम अब तक आसमान पर जीवित बैठा है। इस स्तंभ को तोड़ दो, फिर देखो कि ईसाई धर्म दुनिया में फ़रमायाँ रहता है। ख़ुदा तआला भी चाहता है कि इस स्तंभ को टुकड़े-टुकड़े कर दे और यूरोप व एशिया में तौहीद की हवा चला दे। इसलिए उसने मुझे भेजा है।"

(इज़ाला औहाम, पृष्ठ 232)

धार्मिक युद्धों का अंत

बुखारी की हदीस में हमारे प्यारे आका मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंतिम समय में आने वाले मसीह के बारे में फ़रमाया "यज़अुल हरब" अर्थात वह युद्धों को समाप्त कर देगा।

इसी के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घोषणा की:

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तों ख्याल,
मज़हब के लिए हराम है अब जंग और जिदाल।

संपूर्ण इस्लामी जगत को शांति की शिक्षा देते हुए आपने फ़रमाया:

"मैं आदेश देता हूँ कि जो मेरी जमाअत में शामिल हैं, वे इन विचारों से पीछे हट जाएँ, अपने दिलों को शुद्ध करें, मानव दया को बढ़ाएँ और हिंसक लोगों के साथी न बनें। धरती पर शांति फैलाएँ इससे उनका धर्म फैलेगा।"

(मजमूआ इश्तिहारात हज़रत मसीह मौऊद, जिल्द 3, पृष्ठ 23)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी तलवार नहीं उठाई, सिवाय उनके जिन्होंने पहले तलवार उठाई और निर्दोष पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को अत्यंत क्रूरता से मार डाला। और यदि मान भी लें कि इस्लाम में ऐसा जिहाद था जैसा कुछ मौलवी समझते हैं, तब भी अब वह आदेश कायम नहीं रहा। क्योंकि लिखा है कि जब मसीह मौऊद प्रकट होगा तो तलवार वाला जिहाद समाप्त हो जाएगा। मसीह न तलवार उठाएगा और न कोई सांसारिक हथियार उसकी दुआ उसका हथियार होगी और उसका दृढ़ संकल्प उसकी तलवार होगा। वह शांति की नींव रखेगा, बकरी और शेर को एक ही घाट पर इकट्ठा करेगा। उसका समय शांति, कोमलता और मानव प्रेम का समय होगा। अफसोस! लोग क्यों नहीं सोचते कि तेरह सौ वर्ष पहले ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुख से 'यज़अुल हरब' शब्द निकल चुका था।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, जिल्द 17, पृष्ठ 9-10)

कलमी जिहाद

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेखन और भाषण के माध्यम से इस्लाम के प्रचार में दिन-रात लगे रहते थे। उस समय इस्लाम पर ईसाई मिशनरियों, आर्य समाज और नास्तिक विचारों की ओर से कड़े आरोप लगाए जा रहे थे। आपने शांतिपूर्ण तरीके से सैकड़ों पुस्तकें, पत्रिकाएँ और घोषणाएँ लिखकर इस्लाम की रक्षा की और बताया कि इस्लाम तलवार से नहीं बल्कि तर्क

और नैतिकता से फैलता है।

आप स्वयं फ़रमाते हैं:

"यह भी जिहाद का एक प्रकार है। मैं रात के तीन-तीन बजे तक जागता हूँ, इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि इसमें हिस्सा ले और धार्मिक आवश्यकताओं तथा धार्मिक कार्यों में दिन-रात एक कर दे।"

(मल्फ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद, जिल्द 4, पृष्ठ 194)

صف دشمن کو کیا بحجت پامال سیف کا کام قلم سے ھی دکھایا ھم نے

शत्रु की पंक्ति को प्रमाणों से कुचल दिया,
तलवार का काम कलम से दिखाया हमने।

संक्षेप में, अहमदिया जमाअत के संस्थापक का युग कलम का युग था ज्ञान और प्रमाण का समय था। आपने कलम और तर्क से जिहाद किया और इस्लाम के विरुद्ध होने वाले विभिन्न हमलों का जवाब लेखन और रचनाओं से दिया। आपने 80 से अधिक पुस्तकें लिखीं। इसके अलावा पत्र, घोषणाएँ और लेख हैं जो ज्ञान, इस्लाम के समर्थन और सत्य संदेश के प्रचार का विशाल भंडार हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि यदि दुनिया में किसी नबी की लिखित सामग्री मौजूद है, तो वह हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की है। जब आपकी कलम ने कागज पर स्याही फैलानी शुरू की, तो दुनिया में एक क्रांति आ गई। उसकी गूंज यूरोप से अमेरिका तक, भारत से अफ़्रीका और अरब के रेगिस्तान तक सुनाई देने लगी और आज भी इन रचनाओं की शक्ति अपना चमत्कारी प्रभाव दिखा रही है और दिखाती रहेगी, इंशा अल्लाह।

क्योंकि कलमी जिहाद आप पर अनिवार्य किया गया था, और आपने अपने दायित्व को निभाने में इतना प्रयास किया कि आपको आसमान से "सुल्तान-उल-क़लम" की उपाधि दी गई।

आप फ़रमाते हैं:

"मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के आरंभ में अपनी ओर से भेजा है ताकि मैं इस्लाम की पुनर्स्थापना और समर्थन करूँ, इस अशांत समय में कुरआन की ख़ूबियाँ और हज़रत मुहम्मद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की महानता प्रकट करूँ और इस्लाम पर हमला करने वाले सभी दुश्मनों को उन नूरों, बरकतों और ज्ञान की सहायता से जवाब दूँ जो मुझे दिए गए हैं।"

(बरकातुद्दुआ, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 6, पृष्ठ 35)

आप यह भी फ़रमाते हैं:

"हे सत्य के खोजियों! सोचो क्या यह वही समय नहीं है जब इस्लाम को आसमानी सहायता की जरूरत थी? क्या तुमने अभी तक नहीं देखा कि कितनी विपत्तियों ने इस्लाम को घेर रखा है... तो सोचो, क्या यह आवश्यक नहीं था कि खुदा तआला इस सदी में किसी ऐसे व्यक्ति को भेजे जो बाहरी हमलों का मुकाबला करे... ज़रा नज़र उठाकर देखो कि इस्लाम किस स्थिति में पहुँच गया है और चारों ओर से विरोधियों के तीर उस पर चल रहे हैं।"

(आईना कमालात इस्लाम, पृष्ठ 251)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बताई हुई शिक्षाओं पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

शेष पृष्ठ 24 का

विरोध का मार्ग अपनाया। हज़रत सुल्तानुल क़लम अलैहिस्सलाम की ज्ञानात्मक और आध्यात्मिक महानता उन्हें सहन न हो सकी और वे विरोध के लिए तैयार हो गए। प्रमाण पर प्रमाण प्रस्तुत किए गए, तर्क पूर्ण कर दिए गए, लेकिन जिन दिलों पर पक्षपात की मुहर लग चुकी हो वहाँ मार्गदर्शन का प्रकाश कैसे उतरे?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके बावजूद प्रचार का कर्तव्य पूरी ईमानदारी, धैर्य और बुद्धिमत्ता के साथ निभाया। आपने विद्वानों, सूफ़ी नेताओं और धार्मिक प्रमुखों को अत्यन्त करुणा के साथ सत्य की ओर बुलाया और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अंजाम-ए-आथम" में उस समय के मुस्लिम विद्वानों और धार्मिक नेताओं को मुबाहला की चुनौती दी। यह चुनौती किसी व्यक्तिगत विजय या प्रसिद्धि के लिए नहीं थी, बल्कि सत्य और असत्य के बीच निर्णायक भेद स्थापित करने के लिए थी, ताकि ख़ुदा तआला स्वयं सत्य को प्रकट कर दे।

इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह साहसपूर्ण और पूर्णतः आध्यात्मिक पहल इतिहास-ए-इस्लाम में एक उज्ज्वल अध्याय के रूप में विद्यमान है, जो आज भी न्यायप्रिय लोगों के लिए चिंतन का आह्वान और सत्य-प्रेमियों के लिए विश्वास का स्रोत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अब ऐ विरोधी मौलवियो! और सज्जादा-नशीनो!! यह विवाद हमारे और तुम्हारे बीच बहुत अधिक बढ़ गया है। और यद्यपि यह जमाअत तुम्हारी जमाअतों की तुलना में बहुत थोड़ी और एक छोटा समूह है, और शायद इस समय चार या पाँच हज़ार से अधिक नहीं होगी, फिर भी निश्चित समझो कि यह खुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा है। खुदा इसे कभी नष्ट नहीं करेगा। वह तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक इसे पूर्णता तक न पहुँचा दे। वह इसकी सिंचाई करेगा, इसके चारों ओर सुरक्षा करेगा और आश्चर्यजनक उन्नतियाँ देगा। क्या तुमने इसे कमज़ोर समझा है? यदि यह मनुष्य का काम होता, तो यह वृक्ष कब का काट दिया जाता और इसका नाम-निशान मिट जाता। उसी ने मुझे आदेश दिया है कि मैं तुम्हारे सामने मुबाहला का प्रस्ताव प्रस्तुत करूँ।"

(अंजाम आथम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 11, पृष्ठ 64)

इसके बाद यह मुबाहला की दरख़्वास्त रजिस्ट्री के माध्यम से उस समय के प्रसिद्ध 83 उलमा व मशायख़ और 48 सज्जादा-नशीनों के नाम भेजी गई। इस मुबाहला की दावत के साथ 209 पृष्ठों पर आधारित एक अत्यन्त प्रभावशाली अरबी और फ़ारसी पत्र भी लिखा गया, जिसमें 258 अशआर पर आधारित पद्य रचना भी सम्मिलित थी।

मुबाहला में शर्त के रूप में आपने अलैहिस्सलाम फ़रमाया कि

"मेरे मुबाहला में यह शर्त है कि नीचे लिखे व्यक्तियों में से कम से कम दस व्यक्ति उपस्थित हों, इससे कम न हों। और जितने अधिक हों, वही मेरी प्रसन्नता और उद्देश्य है, क्योंकि बहुतों पर दैवी दंड का एक साथ आ जाना ऐसा खुला निशान है, जो किसी पर भी संदिग्ध नहीं रह सकता। गवाह रह ऐ धरती और ऐ आकाश कि खुदा की लानत उस व्यक्ति पर जो इस पुस्तिका के पहुँचने के बाद न मुबाहला में उपस्थित हो और न तकफ़ीर और अपमान को छोड़े और न उपहास करने वालों की सभाओं से अलग हो।"

(अंजाम आथम, हवाला रूहानी ख़ज़ायन, खंड 11, पृष्ठ 67)

खुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सीधे विभिन्न समयों में इल्हाम के माध्यम से इस महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया कि सब्र और उच्च नैतिकता का दामन हमेशा पकड़े रखना, और चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हो जाएँ शत्रु चाहे कितनी ही नीच और घृणित हरकतें करे, नुकसान पहुँचाने के जितने भी उपाय खोजे जाएँ और वास्तव में नुकसान पहुँचाया जाए तुम्हारा सब्र और स्थिरता कभी नहीं छूटनी चाहिए। दुआओं के माध्यम से खुदा तआला से सहायता माँगते रहो और उसकी सहायता की प्रतीक्षा करते रहो। खुदा तआला के बंदों पर परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ उसी की ओर से आती हैं, लेकिन उसके सच्चे बंदे उन्हें खुदा की ख़ातिर सहन करते हैं।

इसी संबंध में आपने बराहीने अहमदिया में अपने एक इल्हाम का उल्लेख किया है। उसके शब्द इस प्रकार हैं:

اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوالْعَزْمِ۔ اَلَآ اِنَّهَا فِتْنَةٌ مِّنَ اللّٰهِ لِيُحِبَّ حُبًّا جَمًّا۔
حُبًّا مِّنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْاَكْرَمِ۔ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ۔

अर्थ यहाँ उपद्रव है, अतः सब्र करो जैसे दृढ़ निश्चय वाले लोगों ने सब्र

किया। सावधान रहो! यह उपद्रव खुदा की ओर से है ताकि वह ऐसी पूर्ण प्रेम प्रदान करे। उस खुदा का प्रेम जो अत्यन्त प्रतिष्ठित और महान है वह अनुग्रह जो कभी समाप्त नहीं होता (अर्थात कभी समाप्त नहीं होगा)।

(बराहीने अहमदिया, भाग तृतीय, रूहानी ख़ज़ायन, खंड प्रथम, पृष्ठ 609–610, हाशिया दर हाशिया संख्या 3)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

अतः नुबूवत के दावे से भी पहले, बैअत लेने से भी पहले, बल्कि प्रारम्भ में ही खुदा तआला ने आपको सब्र के उच्च गुण की जो शिक्षा दी थी, उसका प्रदर्शन और उस पर अमल आपकी जीवन के अंतिम क्षण तक जारी रहा। जिसकी कुछ मिसालें, जैसा कि मैंने फ़रमाया, मैं प्रस्तुत करूँगा।

हज़रत शेख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार 1898 में मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने एक गालियों से भरा हुआ पत्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में भेजा। अपनी रिपोर्ट में वे लिखते हैं कि मैंने 27 जुलाई 1898 के "अल-हकम" में इस घटना को दर्ज कर दिया है। वे कहते हैं कि आज लगभग तीस वर्ष हो गए, जब भी मैं इसे पढ़ता हूँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साहस, आत्मसंयम और खुदा की ओर पूर्ण ध्यान पर विचार करता हूँ, तो मेरी आँखों से अनायास आँसू निकल आते हैं।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, लेखक मौलाना याक़ूब अली इरफ़ानी साहिब, पृष्ठ 462–463)

(खुत्बा जुमआ, दिनांक 26 नवम्बर 2010)

उपरोक्त तथ्यों, उद्धरणों और ऐतिहासिक प्रमाणों की रोशनी में यह सत्य पूर्ण स्पष्टता के साथ सामने आता है कि हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जिहाद न किसी राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति के लिए था, न तलवार और हिंसा पर आधारित कोई आंदोलन, बल्कि यह पूर्णतः ज्ञानात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक और दैवी जिहाद था, जिसकी नींव सब्र, दुआ, तर्क और उच्च नैतिकता पर रखी गई थी। आपने इस्लाम के विरुद्ध होने वाले संगठित बौद्धिक आक्रमणों का मुकाबला उसी साधन से किया जो उस समय सबसे अधिक प्रभावी और निर्णायक था अर्थात क़लम, प्रमाण और जीवित निशान।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने न केवल यह स्पष्ट कर दिया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार इस युग में जिहाद का वास्तविक अर्थ ज्ञान का जिहाद और क़ुरआन के माध्यम से जिहाद है, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि इस्लाम की वास्तविक शक्ति उसकी जीवित सच्चाई, दैवी समर्थन और आध्यात्मिक प्रभाव में निहित है, न कि ज़बरदस्ती, हिंसा या तलवार के बल में। आपके ज्ञानात्मक चुनौती-पत्र, मुबाहले, भविष्यवाणियाँ और दुआ की स्वीकृति के अद्भुत घटनाक्रम इस बात के अटल प्रमाण हैं कि खुदा आज भी उसी प्रकार जीवित है जैसे पहले था, और इस्लाम आज भी उसी शक्ति और सत्यता के साथ स्थापित है जैसे नबूवत के युग में था।

यह भी दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त तीव्र विरोध, गाली-गलौज, झूठे आरोपों, हत्या के मुकदमों और षड्यंत्रों के बावजूद सब्र, सहनशीलता और आत्मसंयम का ऐसा अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत का वास्तविक प्रतिबिंब था। शत्रुओं की हर पीड़ा के उत्तर में आपकी ज़बान से दुआ निकली, हर आरोप के उत्तर में तर्क प्रस्तुत किया गया और हर उपद्रव के सामने नैतिकता का दीपक जलाए रखा गया। यही वह तरीका था जिसने अंततः असत्य को अपमानित और सत्य को विजयी कर दिया।

मुबाहला की दावत, ज्ञानात्मक वाद-विवाद, लेखन-रचनाएँ और आध्यात्मिक निशान इस बात की गवाही देते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम खुदा तआला के नियुक्त किए हुए थे, जिन्हें इसी उद्देश्य के लिए भेजा गया था कि वे इस्लाम की खोई हुई ज्ञानात्मक और आध्यात्मिक महिमा को पुनः जीवित करें और संसार को दिखा दें कि इस्लाम जीवित धर्म है, जो हर युग के प्रश्नों और आपत्तियों का पूर्ण उत्तर देने की क्षमता रखता है।

अंततः यह निष्कर्ष सामने आता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत ने न केवल मुसलमानों को एक नई बौद्धिक जीवन-शक्ति प्रदान की, बल्कि एक ऐसी जमाअत की नींव रखी जो तर्क, नैतिकता और आध्यात्मिकता के माध्यम से संसार के सामने वास्तविक इस्लाम की प्रतिनिधि बनी। जमाअत अहमदिया के माध्यम से इस्लाम का यह संदेश आज संसार के दूर-दूर तक पहुँच रहा है, और यह उसी दैवी वचन की व्यावहारिक पूर्ति है कि खुदा अपने दीन की रक्षा स्वयं करता है।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जिहाद का तरीका इतिहास-ए-इस्लाम का वह उज्ज्वल अध्याय है जो संसार के अंत तक न्यायप्रिय लोगों के लिए प्रमाण, ज्ञानियों के लिए तर्क और ईमान वालों के लिए विश्वास और संतोष का स्रोत बना रहेगा।

★ ★ ★

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दु के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधन)

★ ★ ★

इस्लाम पर इस्लाम के विरोधियों के आक्रामक हमलों के उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलमी जिहाद

(बशीरुद्दीन कादिर साहब मुर्ब्बी सिलसिला, साप्ताहिक अख़बार बद्र)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ुदा-प्रदत्त और दिव्य मिशन के प्रचार का हक पूरी बहादुरी, बुद्धिमत्ता और दृढ़ता के साथ अदा किया। आपने हर वह साधन अपनाया जो सत्य के संदेश को समस्त मानवता तक पहुँचाने के लिए प्रभावी हो सकता था। लेकिन जब विरोधी सत्य से शत्रुता, पक्षपात, हठ और अज्ञानता की सीमाओं को पार करने लगे और तर्क के स्थान पर गाली, उपहास और झूठे आरोप को अपना हथियार बना लिया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुनिया को ज्ञान और आध्यात्मिक क्षेत्र में अंतिम प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए खुले रूप में चुनौती दी।

ये वे ऐतिहासिक और असाधारण चुनौतियाँ थीं जिन्होंने आध्यात्मिक संसार में आश्चर्यजनक क्रांतियाँ उत्पन्न कर दीं और जिनके परिणामस्वरूप ऐसे दिव्य चिन्ह प्रकट हुए कि बुद्धि चकित रह गई। यही वे चुनौतियाँ थीं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उस महान भविष्यवाणी का उज्ज्वल प्रमाण बनीं कि मसीह और महदी धन बाँटेगा, पर लेने वाला कोई न होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने विरोधियों को अत्यन्त गरिमा और आत्मविश्वास के साथ मुकाबले के मैदान में आने का आम निमंत्रण दिया और सैकड़ों ज्ञानात्मक तथा आध्यात्मिक चुनौतियों के साथ बड़ी धनराशियों वाले पुरस्कारों की घोषणा की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ये चुनौतियाँ उस समय के सभी प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वानों, ईसाई पादरियों, हिन्दू पंडितों, आर्य समाज के नेताओं बल्कि हर उस व्यक्ति के सामने रखी गईं जो इस्लाम, इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, क़ुरआन-ए-करीम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में प्रकट होने वाले दिव्य चिन्हों के ख़ुदाई होने में तनिक भी संदेह रखता था। इतिहास गवाह है कि इन चुनौतियों के सामने कोई भी विरोधी ठहर न सका और अंततः सत्य की सच्चाई प्रकट होकर रही।

इस्लाम का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी इस पवित्र धर्म पर बाहरी शक्तियों ने वैचारिक या सैन्य आक्रमण किया, तो पिछली सदियों में ख़ुदा तआला ने अपने कृपा से ऐसे विद्वान और संत उत्पन्न किए जिन्होंने अत्यन्त साहस, दूरदर्शिता और दृढ़ता के साथ इस्लाम की रक्षा का कार्य किया। लेकिन इन सत्य के योद्धाओं की उज्ज्वल पंक्ति में सबसे अधिक प्रमुख और प्रकाशमान नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम व महदी माऊद अलैहिस्सलाम का है। आपने उन्नीसवीं सदी के अंतिम भाग में, जब यूरोप और उपमहाद्वीप के इस्लाम विरोधियों ने अत्यन्त विषैले, निर्भीक और संगठित वैचारिक आक्रमण आरम्भ कर दिए थे, कलमी जिहाद की नींव पुनः स्थापित की और संसार को यह संदेश दिया कि वर्तमान समय का वास्तविक जिहाद तलवार से नहीं बल्कि तर्क, प्रमाण और ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से होना निश्चित है।

ईसाई मिशनरियों ने लाखों की संख्या में पर्चे, पुस्तकें और पत्रिकाएँ प्रकाशित करके इस्लाम, क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विरुद्ध बदतमीज़ी का तूफ़ान खड़ा कर रखा था। आर्य समाज के नेताओं ने इस्लाम पर अपमानजनक और भ्रामक आपत्तियों की भरमार कर दी थी। प्रकृतिवाद और नास्तिकता की आंदोलनों ने मुसलमानों के मूल विश्वासों को हिलाने का प्रयास किया। ऐसे नाज़ुक और कठिन समय में मुसलमान ज्ञान और धर्म दोनों दृष्टियों से अत्यन्त कमजोर स्थिति में थे और कोई प्रभावी रक्षक दिखाई नहीं देता था।

ऐसे ही अंधकारमय और उपद्रवपूर्ण युग में ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा ताकि वे इस्लाम के शत्रुओं के वैचारिक हमलों का रुख मोड़ दें, इस्लाम की महानता और सत्यता को निर्णायक तर्कों से सिद्ध करें और दुनिया को दिखा दें कि इस्लाम जीवित धर्म है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जिहाद का तरीका

जिहाद की शिक्षा एक मोमिन के जीवन के हर क्षण से सम्बन्ध रखती है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जिहाद बचपन से आरम्भ हुआ और बुढ़ापे तक जारी रहा। यह जिहाद जबल-ए-नूर पर ग़ार-ए-हिरा में इस शान से जारी था कि उस पर ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते भी प्रसन्न हो रहे थे। यह जिहाद उस समय भी जारी था जब आप अकेले खाना काबा में जाकर अपने पालनहार से विनती किया करते थे। यह जिहाद ताइफ़ की बस्ती में उस समय भी जारी था जब आप निराश्रय अवस्था में रक्त से लथपथ होकर

اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

की दुआ में लगे थे। और ग़ार-ए-सौर में भी यही जिहाद जारी था। यह जिहाद उन लंबी रातों के क़ियाम के दौरान भी जारी था जब परम्पराओं के अनुसार लम्बे खड़े रहने से आपके पैर सूज जाते और फट जाते थे। और यह जिहाद उस समय अपनी पराकाष्ठा और पूर्णता को पहुँचा जब आप हर आँख को आँसू से भरकर

فی الرفیق الأعلی فی الرفیق الأعلی

कहते हुए अपने पालनहार के सामने उपस्थित हो गए।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उस्लूब-ए-जिहाद, पृष्ठ 1 से 2)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

असल बात यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उस समय बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना था। आपके अनेक प्राण देने वाले और प्रिय साथी अत्याचारी काफ़िरों के तीर और हथियारों का निशाना बने और तरह-तरह की लज्जाजनक यातनाएँ इन लोगों ने मुस्लिम पुरुषों और मुस्लिम स्त्रियों को दीं, यहाँ तक कि अंततः स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हत्या की योजना बना ली। इसलिए आपका पीछा भी किया गया। आपके हत्यारे के लिए इनाम निर्धारित किए गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक गुफा में शरण लेने लगे। पीछा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। परन्तु यह ख़ुदा तआला की व्यवस्था थी कि सामने होने के बावजूद आपको उनकी नज़रों से छिपा लिया और उनकी आँखों में धूल डालकर अपने रसूल को स्वयं बचा लिया।

अंततः जब इन काफ़िरों के अत्याचारों की कोई सीमा न रही और मुसलमानों को उनके देश से निकाल देने के बाद भी वे संतुष्ट न हुए, तब ख़ुदा तआला की ओर से यह आदेश हुआ:

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ (الحج:40)

ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को तलवार उठाने की अनुमति दी और इस अनुमति में यह सिद्ध कर दिया कि वास्तव में ये लोग अत्याचारी थे, उनकी शरारत सीमा से बढ़ चुकी थी और मुसलमानों का धैर्य भी अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच चुका था। अब ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि जिन्होंने तलवार से मुकाबला किया वे तलवार से ही नष्ट किए जाएँगे। यद्यपि ये थोड़े और कमजोर हैं, फिर भी मैं दिखा दूँगा कि क्योंकि ये अत्याचार के शिकार हैं, इसलिए मैं इनकी सहायता करूँगा और तुम्हें इनके हाथों नष्ट कराऊँगा।

तब इस आदेश के बाद इन्हीं कुछ लोगों की जिन्हें तुच्छ और कमजोर समझा जाता था, जिनका कोई समर्थक न था, न कोई सहायक, और जो काफ़िरों के हाथों अत्यन्त तंग और विवश कर दिए गए थे उनकी धाक पूर्व और पश्चिम में बैठ गई। इस प्रकार ख़ुदा तआला ने उनकी सहायता करके संसार पर प्रकट कर दिया कि वास्तव में वे अत्याचार के शिकार थे।

संक्षेप में, हर प्रकार से, हर दृष्टि से विचार करके देख लो कि उस समय मुसलमान वास्तव में अत्याचार के शिकार थे या नहीं। यदि ख़ुदा तआला ऐसे अत्यन्त संकटपूर्ण और नाज़ुक समय में भी इन कुछ कमजोर मुसलमानों को अपनी जान की रक्षा के लिए तलवार उठाने और रक्षात्मक युद्ध करने की अनुमति न देता, तो क्या उन्हें संसार से मिटा ही देता? इसलिए उस अवस्था में उनका तलवार उठाना जबकि हर दृष्टि से उनका अधिकार था चाहे धार्मिक दृष्टि से हो या सामान्य व्यवहार की दृष्टि से।

लेकिन वह भी आज तक आपत्ति का निशाना बना हुआ है और पक्षपाती तथा अज्ञानी शत्रु आज तक उसे नहीं भूलते। तो क्या अब ये लोग "ख़ूनी महदी" की धारणा प्रस्तुत करके उनकी इन आपत्तियों को फिर ताज़ा करना और मुसलमानों से घृणा उत्पन्न करना चाहते हैं?

देखो, महदी के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं स्पष्ट फ़रमाया है

यज़ाउल् हर्ब वह युद्ध का अंत कर देगा।

और वह युद्ध एक ज्ञानात्मक युद्ध होगा। कलम तलवार का कार्य करेगी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 10 Thursday 05-12 February 2026 Issue No. 10-11

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

और आध्यात्मिक रहस्य, स्वर्गीय बरकतें और प्रभुत्व के चिन्हों के द्वारा संसार को जीता जाएगा। और नित्य नई अदृश्य भविष्यवाणियों और ख़ुदाई सहायता से सच्चे धर्म को विशिष्ट करके दिखाया जाएगा।

यह कह देना कि पूर्वकाल के चमत्कार हमारे पास मौजूद हैं, पर्याप्त नहीं। याद रखो कि हिन्दुओं की पुस्तकों और ईसाइयों तथा यहूदियों की किताबों की कथाओं से अधिक तुम्हारे पास भी कुछ नहीं। यदि तुम कथाएँ प्रस्तुत करोगे तो वे तुमसे अधिक कथाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि इस्लाम की सच्चाई का मापदण्ड भी केवल कथाओं पर रह गया है, तो याद रखो कि यह बात संदेहास्पद हो जाती है।

इस्लाम में फ़ुरक़ान है। ख़ुदा तआला ने हमेशा से इस्लाम में एक असाधारण बात रखी है और आज भी ताज़ा-ताज़ा निशान मौजूद हैं। लेकिन आजकल के दर्शन पढ़ने वाले लोग जब "निशान" का नाम सुनते हैं तो कुछ बेचैन हो जाते हैं। वे कहते हैं कि ख़ुदा के अस्तित्व को जानने के लिए निशानों और नबियों के अस्तित्व की क्या आवश्यकता है?

लेकिन याद रखो कि इस सौर-मंडल और इस संसार की व्यवस्था से, जो अत्यन्त सशक्त और सुव्यवस्थित रूप में पाई जाती है, केवल यह निष्कर्ष निकालना कि ख़ुदा है यह एक कमज़ोर ईमान है। इससे ख़ुदा के अस्तित्व के बारे में पूरी तसल्ली नहीं हो सकती। इससे केवल संभावना सिद्ध होती है। यह नहीं फ़रमाया जा सकता कि निश्चित रूप से ख़ुदा है। यदि इसमें पक्के और अंतिम प्रमाण होते, तो फिर लोग नास्तिक क्यों होते? बड़े-बड़े शोधकर्ता पुस्तकें लिखते हैं, पर उनके तर्क बोलते हुए और निर्णायक प्रमाण नहीं होते। वे किसी का मुँह बंद नहीं कर सकते और न ही उनसे मनुष्य को पक्का ईमान प्राप्त हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति इन बातों से ख़ुदा तआला के अस्तित्व के प्रमाण देगा, तो एक नास्तिक उसके विरुद्ध तर्क प्रस्तुत कर देगा।

असल बात यह है कि इस प्रकार केवल इतना सिद्ध हो सकता है कि ख़ुदा होना चाहिए। यह सिद्ध नहीं होता कि वह है। "होना चाहिए" और "है" इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। "है" प्रत्यक्ष अनुभव चाहता है। लेकिन अस्तित्व-ए-बारी तआला के लिए नबियों ने जो दूसरा मार्ग प्रस्तुत किया है, वह यह है कि महान निशानों, चमत्कारों और ख़ुदा की महान शक्ति के प्रकट होने से उसकी सत्ता सिद्ध की जाए। यह ऐसा मार्ग है कि इस प्रमाण के सामने सब सिर झुक जाते हैं। वास्तव में बहुत से अरब नास्तिक थे, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ की निम्न आयत से मालूम होता है:

اِنۡ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنۡیَا نَمُوۡتُ وَ نَحۡیَا

(المومنون:38)

क्या अरब जैसे कठोर, निर्भीक, बेपरवाह और निडर लोगों को तलवार से सीधा किया गया था? और क्या उनकी पहले और बाद की जीवन-स्थिति में इतना बड़ा अंतर केवल इस कारण था कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलवार का सामना न कर सके थे? या क्या केवल साधारण और मात्र नैतिक शिक्षा ही थी, जिससे उनके दिलों में इतनी पवित्र परिवर्तन आ गया था? नहीं, हरगिज़ नहीं। याद रखो कि तलवार मनुष्य के बाहरी रूप को जीत सकती है, लेकिन दिल कभी तलवार से नहीं जीते जाते। बल्कि वे दिव्य प्रकाश थे, जिनमें ख़ुदा का चेहरा दिखाई देता था, और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें ऐसे-ऐसे असाधारण निशान दिखाए थे कि स्वयं ख़ुदा उनके सामने उपस्थित हो गया था। उन्होंने ख़ुदा तआला के वैभव और प्रभुत्व को देखकर पाप-दाहक जीवन और पवित्र परिवर्तन अपने भीतर उत्पन्न कर लिया था।

(मल्फ़ूज़ात, खंड 10, पृष्ठ 309 से 313, संस्करण 1984)

आप अलैहिस्सलामने बार-बार फ़रमाया कि आज के समय का जिहाद तलवार से नहीं बल्कि क़लम से है। अतः इस बौद्धिक क्षेत्र में आपने जो सेवाएँ कीं, वे इतिहास-ए-इस्लाम का उज्ज्वल अध्याय हैं।

क़ुरआन करीम की रक्षा और उसकी सच्चाई का स्पष्ट प्रदर्शन

आप अलैहिस्सलामने अपनी पुस्तकों में क़ुरआन को पूर्ण और अपरिवर्तित ग्रंथ सिद्ध किया, उसके ज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और नैतिक चमत्कारों को विस्तार से समझाया और विरोधियों के क़ुरआन पर लगाए गए आपत्तियों का विद्वत्तापूर्ण उत्तर दिया। आपकी पुस्तक बराहीने अहमदिया इस क्षेत्र में एक मील का पत्थर है, जिसे विद्वानों ने "इस्लामी ज्ञान का विश्वकोश" फ़रमाया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवन-चर्या और महानता का अद्वितीय प्रतिरक्षण

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विरोधियों के अपमानजनक आक्रमणों का अत्यन्त बुद्धिमत्ता, शोध और प्रमाण के साथ उत्तर दिया। आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें चश्मा-ए-मआरिफ़त, बराहीने अहमदिया, नूरुल हक़, सुरमा चश्म-ए-आर्य, और 80 से अधिक अन्य ग्रंथ आज भी इस्लाम की प्रतिष्ठा और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की महानता के जीवित प्रमाण हैं। आपने सिद्ध किया कि शत्रु चाहे जितनी आपत्तियाँ उठाएँ, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र व्यक्तित्व वह प्रकाश-स्तंभ है जिसे कोई तूफ़ान बुझा नहीं सकता।

मिथ्या धर्मों की बौद्धिक कमज़ोरियों का उद्घाटन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ईसाई धर्म के गढ़े हुए विश्वासों, आर्य समाज की भ्रांतियों, ब्रह्मो आंदोलन और प्रकृतिवाद के सिद्धांतों का गहन तर्क से खंडन किया। उदाहरण के लिए सुरमा चश्म-ए-आर्य में आर्य मान्यताओं की तर्कगत कमज़ोरियाँ उजागर कीं। इज़ाला औहाम में पादरियों की आपत्तियों का वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण उत्तर दिया। तौहफ़ा गोलड़विया और फ़तह इस्लाम में सिद्ध किया कि इस्लाम ही वह जीवित धर्म है जो समय की चुनौतियों का सामना कर सकता है।

आध्यात्मिक पुनर्जागरण: वह्यी, दुआ और निशानों का जिहाद

क़लम के साथ-साथ आपने आध्यात्मिक जिहाद भी किया ख़ुदा तआला के संदेशों, भविष्यवाणियों और दुआ की स्वीकृति के माध्यम से विरोधियों पर स्पष्ट किया कि ख़ुदा आज भी जीवित है और इस्लाम उसकी जीवित निशानी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निशान विरोधियों की सभी योजनाओं पर भारी पड़े। गोलड़वी, लेखराम, आथम, डोई और अन्य विरोधी ख़ुदा की पकड़ में आए और इस्लाम के विरुद्ध उनकी आवाज़ें शांत हो गईं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घोषणा की कि इस्लाम की वास्तविक शक्ति ज्ञान और आध्यात्मिक प्रभुत्व है, न कि तलवार या ज़बरदस्ती। आपने एक नए युग का आरंभ किया कि हमें ख़ुदा ने तलवार से नहीं बल्कि तर्कों से भेजा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लेखन के परिणामस्वरूप जब इस्लाम की ज्ञानात्मक और आध्यात्मिक श्रेष्ठता संसार पर पूर्ण वैभव के साथ प्रकट हुई, तो विरोधियों की आपत्तियाँ स्वयं ही समाप्त हो गईं। असत्य के महल प्रमाणों के सामने काँप उठे और सत्य की सच्चाई ऐसी महिमा से प्रकट हुई कि मुसलमानों को फिर से सम्मान, स्थिरता और तर्क पर आधारित आत्मविश्वास प्राप्त हुआ। विशेष रूप से जमाअत अहमदिया के माध्यम से वास्तविक इस्लाम का संदेश संसार के कोने-कोने तक पहुँचने लगा और दिलों में नई जीवन-शक्ति तथा विचारों में नई जागृति उत्पन्न हो गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने संसार पर यह सत्य दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट कर दिया कि वास्तविक जिहाद तलवार से नहीं बल्कि क़लम, दुआ और उच्च नैतिकता से होता है। आपका आदर्श इस बात की व्यावहारिक व्याख्या था कि बौद्धिक संघर्ष तर्क से, आध्यात्मिक युद्ध दुआ से और दिलों की विजय नैतिकता से प्राप्त होती है। यही वह जिहाद था जिसने सदियों पुराने जंग लगे विचारों को तोड़ दिया और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर संसार के सामने रख दी।

लेकिन अफ़सोस कि वे विद्वान जो आध्यात्मिक प्रकाश से वंचित थे, उन्होंने क़ुरआन और हदीस के स्पष्ट प्रमाणों को स्वीकार करने के बजाय इनकार और

शेष पृष्ठ 21 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad